उच्च माध्यमिक पाठ्यक्रम

# हिंदी

ऐच्छिक

HIGHER SECONDARY COURSE

# HINDI

OPTIONAL

## XI

केरल सरकार

सार्वजनिक शिक्षा विभाग

2026

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्

केरल, तिरुवनंतपुरम

# राष्ट्रगान

जनगण-मन अधिनायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
पंजाब-सिंध-गुजरात-मराठा,
द्राविड़-उत्कल-बंगा
विंध्य-हिमाचल-यमुना-गंगा,
उच्छल जलधि तरंगा,
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मागे,
गाहे तव जय-गाथा
जनगण-मंगलदायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे
जय जय जय, जय हे।

# प्रतिज्ञा

भारत हमारा देश है। हम सब भारतवासी भाई-बहन हैं। हमें अपना देश प्राणों से भी प्यारा है। इसकी समृद्धि और विविध संस्कृति पर हमें गर्व है। हम इसके सुयोग्य अधिकारी बनने का प्रयत्न सदा करते रहेंगे। हम अपने माता-पिता, शिक्षकों और गुरुजनों का आदर करेंगे और सबके साथ शिष्टता का व्यवहार करेंगे। हम अपने देश और देशवासियों के प्रति वफ़ादार रहने की प्रतिज्ञा करते हैं। उनके कल्याण और समृद्धि में ही हमारा सुख निहित है।

Prepared by
**State Council of Educational Research and Training(SCERT)**
Poojappura, Thiruvananthapuram 695012, Kerala
Website : www.scertkerala.gov.in, e-mail : scertkerala@gmail.com
Phone : 0471-2341883, Fax : 0471-2341869
Typeset and design by : SCERT, First Edition : 2024
Printed at : KBPS, Kakkanad, Kochi-30
© Department of General Education, Government of Kerala

# वक्तव्य

मित्रो...

भाषा विचार, संवेदना और संस्कृति का जीवंत माध्यम है। भाषाई पाठ्य पुस्तक संवादशील और संवेदन शील होनी चाहिए। इसी बात को ध्यान में रखकर संशोधित पाठ्यक्रम के अनुरूप ग्यारहवीं कक्षा की यह हिंदी पाठ्य पुस्तक केरल के विद्यार्थियों की भाषिक दक्षता, सृजनात्मक सोच और सामाजिक चेतना को विकसित करने के उद्देश्य से तैयार की गई है। कविता, कहानी, संस्मरण, रेखाचित्र, फिल्मी समीक्षा तथा हिंदी साहित्य का इतिहास जैसी विविध प्रोक्तियों के माध्यम से यह पुस्तक भाषा के सौंदर्य और जीवन के यथार्थ से विद्यार्थियों का सार्थक संवाद स्थापित करती है। मुझे विश्वास है कि यह पाठ्य पुस्तक अधिगम प्रक्रिया को समृद्ध बनाते हुए विद्यार्थियों में अभिव्यक्ति की आत्मविश्वास पूर्ण क्षमता का विकास करेगी।

**डॉ. जयप्रकाश आर के**
निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं
प्रशिक्षण परिषद्, केरल

# TEXTBOOK DEVELOPMENT TEAM

## MEMBERS

SAJAYAN R S
HSST HINDI
Model HSS
Kalanjoor, Pathanamthitta

Dr. P. MANJU VIJAYAN
HSST HINDI
GHSS Tholanur
Palakkad

ANITHA V P
Principal (Rtd)
Anangannadi HSS
Panamanna, Palakkad

RESEENA R
HSST HINDI
Govt. Tamil HSS
Chalai, Thiruvananthapuram

Dr. KRISHNA KUMAR PILLAI
HSST HINDI
GHSS Perinad, Kollam

ROSHNI M S
HSST HINDI
GHSS, Central Calvathy
Fort Kochi, Ernakulam

## ADVISOR

Prof. (Dr.) S. R. JAYASREE
Department of Hindi
Kariavattom Campus
Thiruvananthapuram

## CHAIRMAN

Prof. (Dr.) N.SURESH
Professor of Hindi (Rtd)
Department of Hindi
University of Kerala
Thiruvananthapuram

## EXPERT

Prof. (Dr.) JOHN PANICKER
Asst.Proffessor (Rtd)
St Grigorios College
Kottarakkara
Kollam

## ARTISTS

C. RAJENDRAN OACHIRA
Art Teacher Rtd., Govt. AVHS
Thazhava, Karunagappally, Kollam

BALAKRISHNAN KADIRUR
Art Teacher Rtd., GHSS Muppathadam
Ernakulam

## LAYOUT

ABHILASH S
Jr Hindi Teacher, Govt. UPS Kuttamala
Kattakada, Thiruvananthapuram

## ACADEMIC CO-ORDINATOR

DEEPA N. KUMAR
Research Officer (HINDI), SCERT, Kerala

State Council of Educational Research and Training (SCERT), Kerala
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, केरल

# अनुक्रमणिका

## साहित्य खंड


1. कविता
   जुही की कली — सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' — 9-13

2. लेख
   इमली : हिंदुस्तान का खजूर — इब्बार रब्बी — 14-20

3. कहानी
   लड़की — रामदरश मिश्र — 21-30

4. कविता
   दोहे — कबीरदास — 31-36

5. संस्मरणात्मक रेखाचित्र
   सोना हिरनी — महादेवी वर्मा — 37-47

6. फिल्मी समीक्षा
   सुलतान — 48-52

7. कविता
   चुनौती — उषा यादव — 53-58

8. कहानी
   फुलवा — नासिरा शर्मा — 59-71

9. जीवनी
   मरङ गोमके जयपाल सिंह मुंडा — अश्विनी कुमार 'पंकज' — 72-83


## इतिहास खंड


*1. हिंदी साहित्य का इतिहास-भूमिका* — *85*

*2. हिंदी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन* — *86*

*3. आदिकाल* — *87-89*

*4. भक्ति काल* — *90-98*

*5. रीति काल* — *99-102*

# भारत का संविधान

## उद्देशिका

**हम**, भारत के लोग, भारत को एक [1][**संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य**] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय**,
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता**,
प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और [2][राष्ट्र की एकता
और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई० (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3-1-1977 से) "प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य" के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3-1-1977 से) "राष्ट्र की एकता" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

# साहित्य- खंड

## अधिगम उद्देश्य

- छायावादी कविता का विश्लेषण करना, प्रवृत्तियाँ एवं शैलीगत विशेषताएँ पहचानना, टिप्पणी लिखना और आलाप करना।
- लेख का आशय ग्रहण करना, विश्लेषण करना, शैली पहचानना और विभिन्न प्रसंगों के आधार पर विधांतरण करना।
- संज्ञा शब्दों से परिचय पाना, पहचानना, परिभाषा समझना और नए प्रसंगों में प्रयोग करना।
- आधुनिक कहानी का आशय ग्रहण करना, विश्लेषण करना, कथ्यगत और शैलीगत विशेषताएँ पहचानना और विभिन्न प्रसंगों के आधार पर विधांतरण करना।
- सर्वनाम शब्दों से परिचय पाना, पहचानना, परिभाषा समझना और नए प्रसंगों में प्रयोग करना।
- परसर्गों से परिचय पाना, संज्ञा और सर्वनाम के साथ परसर्ग के लगने पर होने वाले विकार को समझना और नए प्रसंगों में प्रयोग करना।
- दोहे का वाचन करना, आशय ग्रहण करना, विश्लेषण करना, व्याख्या करना एवं टिप्पणी लिखना।

- संस्मरणात्मक रेखाचित्र का आशय ग्रहण करना, विश्लेषण करना, भाषापरक एवं शैलीगत विशेषताएँ पहचानना एवं विधांतरण करना।
- विशेषण शब्दों से परिचय पाना, पहचानना, परिभाषा समझना और नए प्रसंगों में प्रयोग करना।
- फिल्मी समीक्षा का अध्ययन करना, आलोचनात्मक दृष्टि से परखना, समीक्षा के विभिन्न तत्वों को पहचानना एवं फिल्मी समीक्षा तैयार करना।
- समकालीन हिंदी कविता का आशय ग्रहण करना, विश्लेषण करना, भाषागत एवं शैलीगत विशेषताएँ पहचानना, व्याख्या करना एवं आस्वादन टिप्पणी लिखना।
- समकालीन कहानी का आशय ग्रहण करना, विश्लेषण करना, कथ्यगत और शैलीगत विशेषताएँ पहचानना और विभिन्न प्रसंगों के आधार पर विधांतरण करना।
- क्रिया शब्दों से परिचय पाना, पहचानना, परिभाषा समझना और नए प्रसंगों में प्रयोग करना।
- जीवनी का आशय ग्रहण करना, विश्लेषण करना, भाषापरक एवं शैलीगत विशेषताएँ पहचानना एवं विधांतरण करना।
- हिंदी के विभिन्न कालों से परिचय पाना, पहचानना, काल के विभिन्न प्रयोगों की जानकारी पाना और नए प्रसंगों में प्रयोग करना।
- हिंदी साहित्य के इतिहास और उसके काल-विभाजन से परिचय पाना।
- आदिकालीन साहित्य की प्रवृत्तियों और प्रमुख कवियों से परिचय पाना।
- भक्तिकालीन साहित्य की प्रवृत्तियों और प्रमुख कवियों से परिचय पाना।
- रीतिकालीन साहित्य की प्रवृत्तियों और प्रमुख कवियों से परिचय पाना।

"छायावाद गीत काव्य है, प्रकृति काव्य है, प्रेम काव्य है।"

देवराज

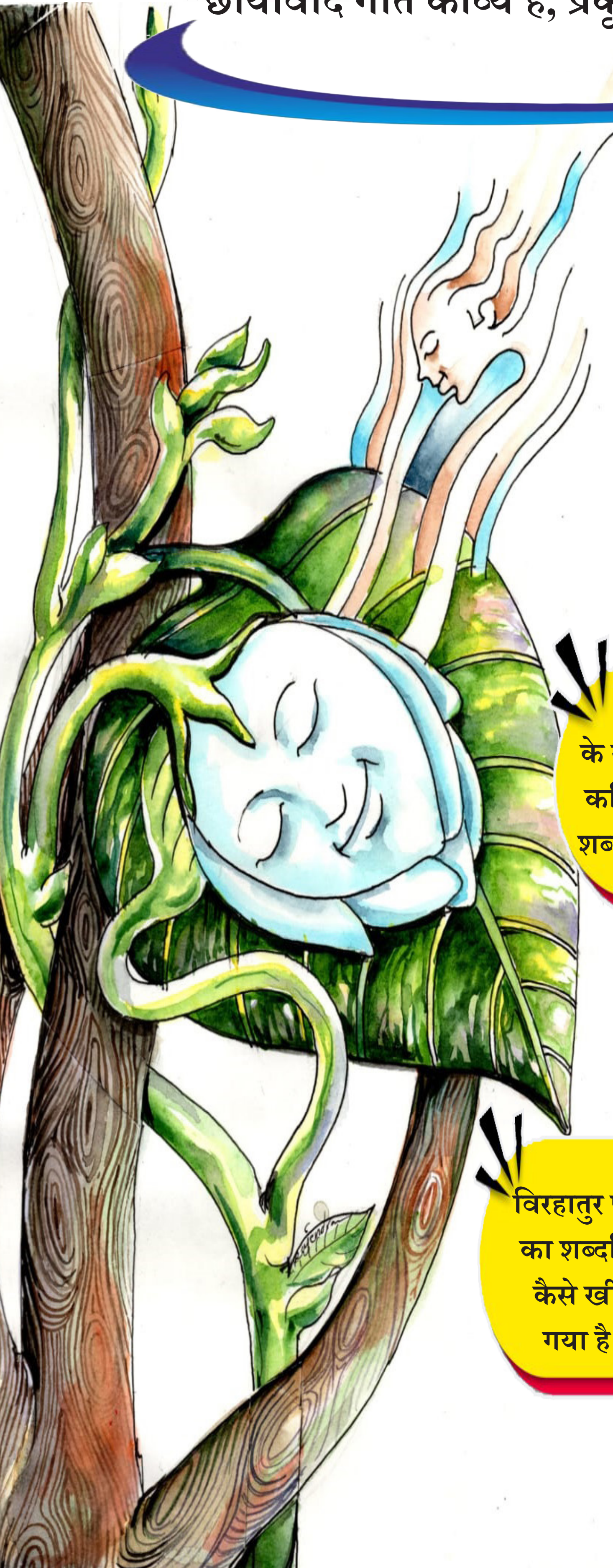

कविता

# जुही की कली

**सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'**

विजन-वन-वल्लरी पर
सोती थी सुहाग-भरी-स्नेह-स्वप्न-मग्न
अमल-कोमल-तनु तरुणी - जुही की कली,
दृग बंद किए, शिथिल-पत्रांक में,
वासंती निशा थी;
विरह-विधुर प्रिया-संग छोड़
किसी दूर देश में था पवन
जिसे कहते हैं मलयानिल।
आई याद बिछुड़न से मिलन की वह मधुर बात,
आई याद चाँदनी की धुली हुई आधी रात,
आई याद कांता की कंपित कमनीय गात,
फिर क्या ? पवन
उपवन-सर-सरित गहन-गिरि-कानन
कुंज-लता-पुंजों को पार कर
पहुँचा जहाँ उसने की केलि
कली-खिली-साथ !

**जुही की कली के सौंदर्य का वर्णन कवि ने किन-किन शब्दों में किया है ?**

**विरहातुर पवन का शब्दचित्र कैसे खींचा गया है ?**

कली-खिली-साथ !

सोती थी,
जाने कहो कैसे प्रिय आगमन वह ?
नायक के चूमे कपोल,
डोल उठी वल्लरी की लड़ी जैसे हिंडोल।
इसपर भी जागी नहीं,
चूक-क्षमा माँगी नहीं,
निद्रालस बंकिम विशाल नेत्र मूंदे रही-
किंवा मतवाली थी यौवन की मदिरा पिए,
कौन कहे ?
निर्दय उस नायक ने
निपट निठुराई की,
कि झोंकों की झड़ियों से
सुंदर सुकुमार देह सारी झकझोर डाली,
मसल दिए गोरे कपोल गोल;
चौंक पड़ी युवती -
चकित चितवन निज चारों ओर फेर,
हेर प्यारे को सेज पास,
नम्रमुख हँसी-खिली,
खेल रंग, प्यारे-संग।

**पवन के आगमन पर कली की नींद नहीं खुली। क्यों ?**

**'चौंक पड़ी युवती' -क्यों ?**

# अनुगामी कार्य

## गुज़रें - समझें : -

1. **कविता से समानार्थी शब्द ढूँढ़ें।**

   लता, पवित्र, शरीर, नेत्र, हवा, झूलना, बंद करना, मस्त, युवती

2. **छायावाद की प्रमुख प्रवृत्तियाँ हैं- मानवीकरण, प्रकृति वर्णन, कल्पना, सौंदर्यात्मकता आदि। इनका प्रयोग कविता में कई स्थानों पर हुआ है। उन्हें चुनकर तालिका भरें।**

| छायावाद की विशेषता / प्रवृत्ति | कविता में प्रयुक्त पदावली |
|---|---|
| मानवीकरण | |
| प्रकृति वर्णन | |
| कल्पना | |
| सौंदर्यात्मकता | |

3. **छायावादी कविताओं में तत्सम शब्दों का प्रचुर प्रयोग होता है। कविता से ऐसे तत्सम शब्द चुनकर लिखें। जैसे: तनु तरुणी**

## परखें - पहचानें : -

1. **प्रकृति और मानव के संबंध को कविता में कैसे दर्शाया गया है ? भावानुकूल प्रतिक्रिया दें।**
2. **छायावाद की विशेषताओं के आधार पर 'जुही की कली' की आस्वादन टिप्पणी तैयार करें।**

## खोजें - अपनाएँ : -

अन्य छायावादी कविताओं का संकलन करें और कविता पाठ की ओडियो बुक तैयार करें।

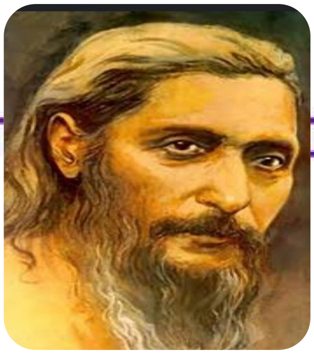

## सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

| | | |
|---|---|---|
| जन्म | : | 1899, मिड़नापुर, बंगाल |
| साहित्यिक पहचान | : | छायावादी युग के प्रमुख स्तंभों में से एक |
| प्रमुख रचनाएँ | : | काव्य : अनामिका, परिमल, गीतिका, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, अणिमा<br>कहानी संग्रह : लिली, सखी<br>उपन्यास : अप्सरा, अलका |
| पुरस्कार | : | उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान पुरस्कार |
| मृत्यु | : | 1961 |

## मदद लें

| | |
|---|---|
| विजन | निर्जन |
| वल्लरी | लता |
| सुहागिन | शादीशुदा |
| अमल | पवित्र |
| कोमल | मृदु |
| तरुणी | युवती |
| दृग | नेत्र |
| पत्रांक | पत्तों का आँचल |
| वासंती निशा | वसंत ऋतु की रात |
| पवन | हवा |
| मलयानिल | मलय पर्वत से निकलने वाली हवा |
| बिछुड़न | अलगाव |
| केलि | चेष्टा |
| चूमे (चूमना) | चुंबन करना |
| कपोल | गाल |
| वल्लरी की लड़ी | लताओं की माला या पंक्ति |
| हिंडोल | झूला |
| बंकिम | आधी खुली आँखें |
| मूंदना | बंद करना |
| झोंकों की झड़ियों से | लगातार आने वाली हवा से |
| चितवन | निगाह, दृष्टि |
| हेरना | देखना |

मैंने कहा, "पेड़, तुम इतने बड़े हो,
इतने कड़े हो, न जाने कितने सौ बरसों के आँधी-पानी में
सिर ऊँचा किए अपनी जगह अड़े हो।"

अज्ञेय ('पेड़' कविता से)

लेख

# इमली : हिंदुस्तान का खजूर

इब्बार रब्बी

उन दिनों घर से स्कूल जाते समय रास्ते में दोनों ओर इमली के पेड़ होते थे। हम इनपर या तो चढ़कर इमली खाते या नीचे से ही पत्थर फेंककर इन्हें गिराने की कोशिश करते। एकाध इमली हाथ लगती तो कभी मिल-बाँटकर या कभी छीन-झपटकर खाते। देर से स्कूल पहुँचने पर जब डाँट पड़ती तो थोड़ी देर को इमली का खट्टा-मिट्ठा स्वाद और चटखारे सब गायब हो जाते। पर शाम को फिर वही होता। ये सब हमारे बचपन की यादें हैं। आजकल बड़े महानगरों में कम इमली के पेड़ हैं, कम बच्चे पैदल स्कूल जाते हैं। इसलिए इमली बच्चों के जीवन से गायब हो रही है।

'इमली बच्चों के जीवन से गायब हो रही है।' लेखक ने ऐसा क्यों कहा होगा ?

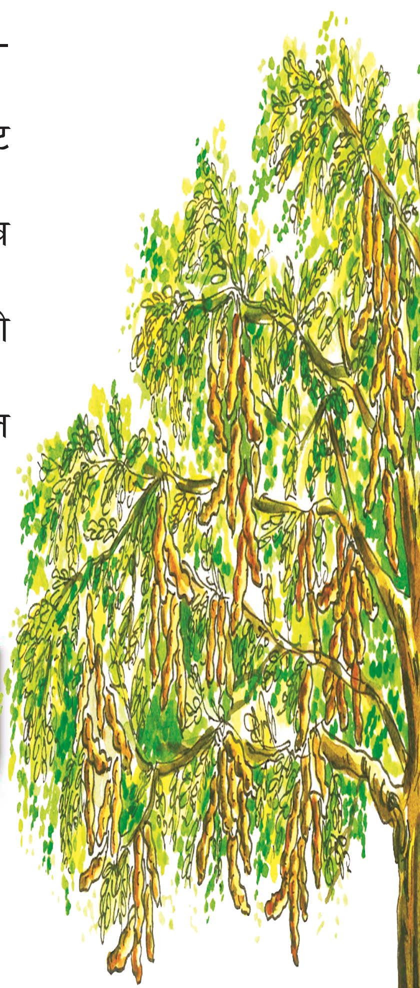

इमली के लिए संस्कृत में 'अम्लिका' या 'आमलिका' शब्द है। संस्कृत का 'अम्लिका' तेलुगु में जस का तस 'आम्लिका' में मौजूद है। वहाँ सिर्फ़ 'अ' की ध्वनि 'आ' में बदल गई है। मलयालम में यह सरल होकर 'आम्लम' हो गई। यहाँ 'इ' की ध्वनि गायब हो गई। मलयालम में इसे 'वालमपुलि' या 'पुलि' भी कहते हैं। तमिल में भी इमली का नाम 'पुलि' है। इमली का अगला रूप 'आम्बीली' बना, जो बंगला और गुजराती में सुरक्षित है। इन दोनों भाषाओं में इमली को 'ऑवली' कहते हैं। उड़िया और कन्नड़ भाषाओं में यह शब्द संस्कृत शब्द से बहुत दूर है। उड़िया में इसे 'तेंतुली' और कन्नड़ में 'चितचिंच' और 'हुमसेमरा' कहते हैं। 'तेंतुली' बोलने पर मुँह इमली के खट्टे-मिट्ठे स्वाद से भर जाता है।

**इमली के लिए प्रयुक्त अन्य भाषा शब्द कौन-कौन से हैं ?**

भारत से इमली अरब गई। इस तथ्य को अरबी भाषा ने सुरक्षित रखा। अरबी में इसे 'तमार-उल-हिंद' कहते हैं जिसका अर्थ है 'भारत का खजूर'। बाद में बीच का 'उल' गायब हो गया और केवल 'तमरहिंद' रह गया। यानी हिंदुस्तान से आई तमर। अरबी में इसका अर्थ है पकी इमली या हिंदुस्तानी सूखा खजूर।

सन् 1563 में पुर्तगाली लेखक गार्सिया ने लिखा था- मलबार (केरल) में इसे 'पुलि' कहते हैं और गुजरात में 'आम्बीली'। भारत में हर जगह

इसका यही नाम है। अरब इसे 'तमारिंदी' कहते हैं। कॉस्टीलियन इसे 'खजूर' कहते हैं। 'तमारिंदी' भारत का खजूर है। इसमें गुठली होती है। इसके अलावा फल और पेड़ की खजूर से कोई समानता नहीं है, पर अरब के लोग 'खजूर' के अलावा अन्य किसी बेहतर फल की कल्पना नहीं कर सकते, इसलिए उन्होंने इसे खजूर कहा।

**अरब लोग इमली को खजूर क्यों कहते हैं ?**

फ़ारसी में इसका नाम 'तमार-ए-हिंदी' है। वहाँ थमार का अर्थ है फल और तमार का खजूर। अरबी और फ़ारसी के 'तमर-हिंद' को अंग्रेज़ी ने अपनी ध्वनि में ढालकर 'तैमारिंड' कर लिया। अंग्रेज़ी में 'त' की ध्वनि की जगह केवल 'ट' है। वहाँ 'ह' की ध्वनि भी नहीं रही, इसलिए वहाँ अरबी फ़ारसी का 'तमरहिंद' बन गया 'टैमरिंड' (तैमरिंड)।

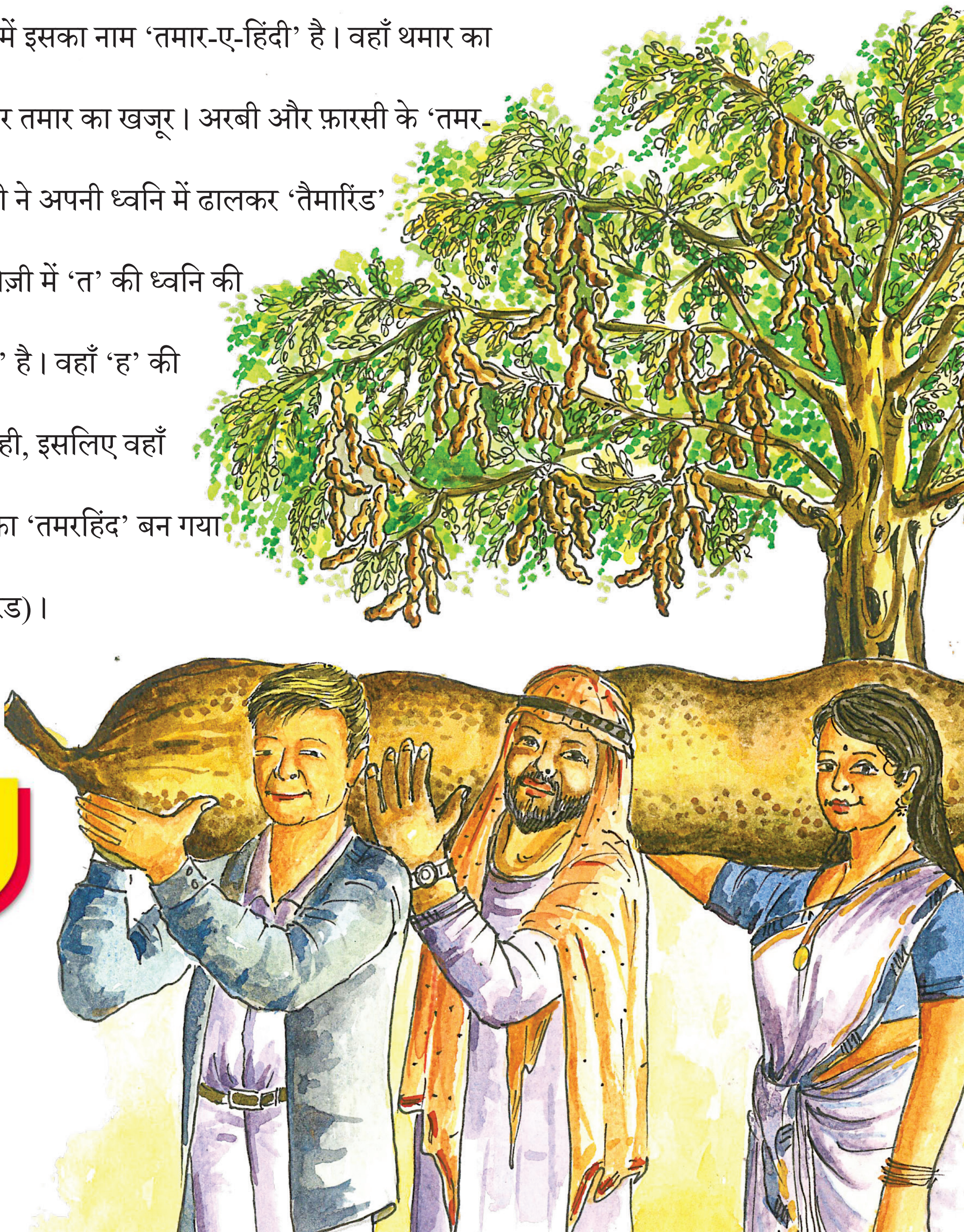

**इमली शब्द टैमरिंड तक कैसे पहुँचा ?**

सन् 1298 में यूरोप के यात्री मार्को पोलो ने लिखा- जब उन्होंने एक व्यापारी जहाज़ ले लिया तो सौदागरों को पानी में मिलाकर एक चीज़ 'तमारिंदी' पीने पर मजबूर किया। स्पष्ट है, मार्को पोलो यहाँ इमली के शरबत का ज़िक्र कर रहा है।

इमली के पेड़ भारत और म्यान्मार में बहुत होते हैं। इसकी तासीर ठंडी होती है। इमली की लकड़ी बहुत मज़बूत होती है और पानी में गलती नहीं है। इसलिए इमली की लकड़ी नाव बनाने के काम आती है। उत्तर भारत के भोजन में खटाई के लिए कच्चे आम का प्रयोग होता है, तो दक्षिण भारत में इमली का। कहावत है कि इमली की छाया में सोने से बुखार आ जाता है और नीम के नीचे सोने से उतर जाता है, लेकिन इस कहावत के विपरीत, स्याम (थाइलैंड) के लोग इमली के नीचे खेलते भी हैं और सोते भी हैं। इलाहाबाद में मुख्य सड़क के दोनों ओर इमली के पेड़ थे। यहाँ ये पेड़ आज भी खड़े हैं।

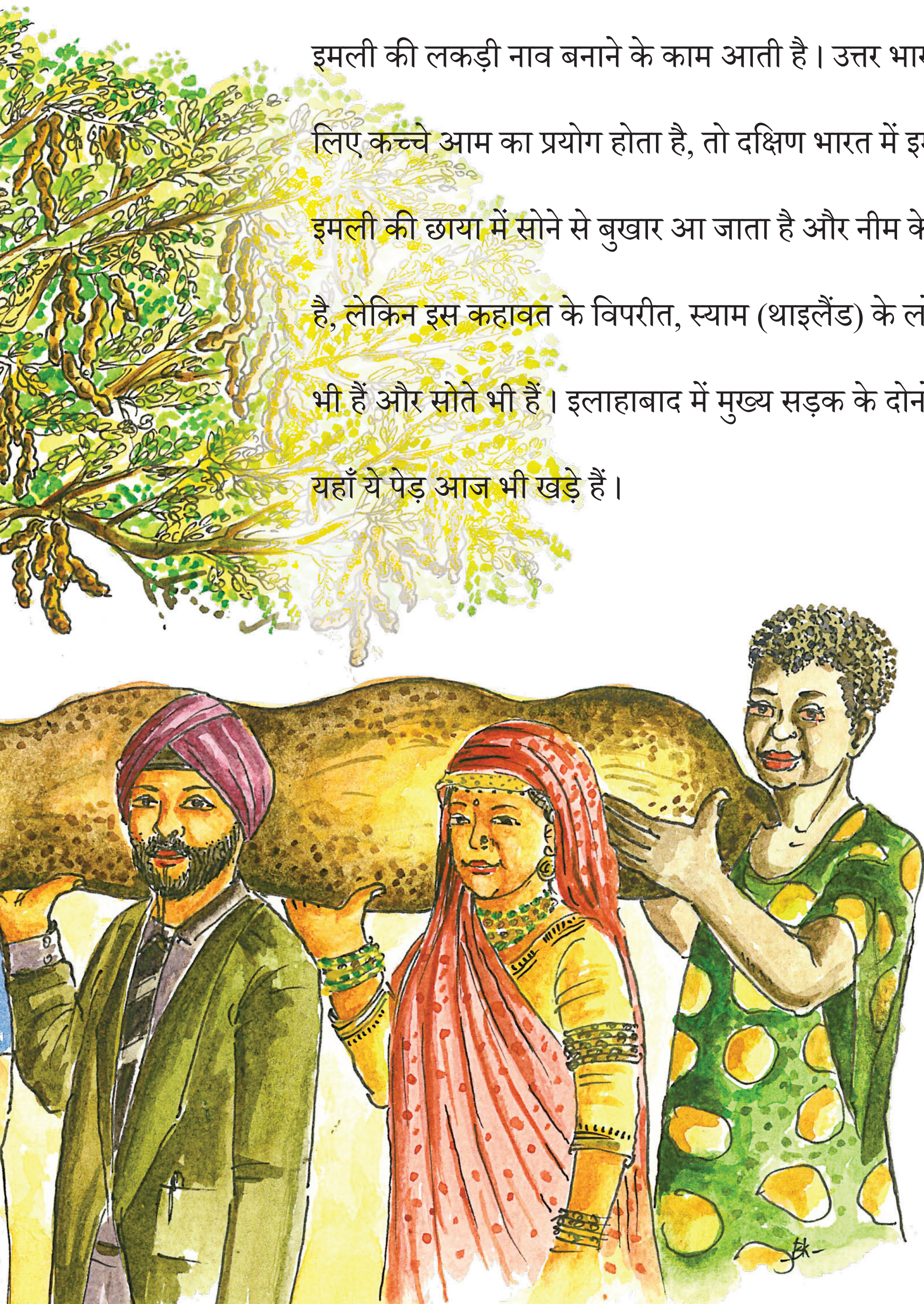

इमली के संबंध में प्रचलित कहावत पर आपकी राय क्या है ?

## अनुगामी कार्य

### गुज़रें - समझें : -

1. विभिन्न भाषाओं में 'इमली' के लिए प्रयुक्त शब्दों से तालिका भरें।

| भाषा | शब्द |
|---|---|
| मलयालम | वालमपुलि |
| | |
| | |
| | |

### परखें - पहचानें : -

1. 'मैं इमली हूँ। .......' इमली के इस आत्मकथांश को आगे बढ़ाएँ।

2. जून 05 पर्यावरण दिवस है। मान लें आपके स्कूल में 'पर्यावरण मंच' के नेतृत्व में वृक्षारोपण समारोह का आयोजन होने वाला है। इसके प्रचार के लिए एक पोस्टर तैयार करें।

3. यह वाक्य पढ़ें और रेखांकित शब्दों पर ध्यान दें।

   '<u>*भारत*</u> से <u>इमली</u> <u>अरब</u> गई।

   ये रेखांकित शब्द किसी के नाम हैं। इन्हें ***संज्ञा*** कहते हैं।

**निम्नलिखित वाक्यों से संज्ञा शब्द चुनकर लिखें।**

- *उन दिनों घर से स्कूल जाते समय रास्ते में दोनों ओर इमली के पेड़ होते थे।*
- *महानगरों में कम इमली के पेड़ हैं।*
- *तमिल में 'इमली' का नाम 'पुलि' है।*
- *यूरोप के यात्री मार्को पोलो ने लिखा।*
- *उत्तर भारत के भोजन में खटाई के लिए कच्चे आम का प्रयोग होता है।*

**किसी व्यक्ति, वस्तु, भाव, जाति को सूचित करने वाला शब्द है संज्ञा।**

## खोजें - अपनाएँ : -

**इमली के विभिन्न नाम और देश को जोड़कर एक डिजिटल कोलॉज़ तैयार करें।**

# इब्बार रब्बी

| | | |
|---|---|---|
| जन्म | : | 1941, अलीगढ़, उत्तरप्रदेश |
| प्रमुख रचनाएँ | : | खाँसती हुई नदी, घोषणा पत्र, लोगबाग, वर्षा में भीगकर |
| विशेषताएँ | : | कवि, कहानीकार, निबंधकार एवं पत्रकार |
| पुरस्कार | : | विजयदेव नारायण साही पुरस्कार<br>कविता-समय सम्मान<br>शमशेर सम्मान |

## मदद लें

| | |
|---|---|
| खजूर | Dates |
| चढ़ना | to climb |
| तासीर | प्रभाव, असर |
| खटाई | अम्लता |
| चटखारा | तीखा, खट्टा या चटपटा स्वाद |
| गुठली | बीज |
| सौदागर | व्यापारी |
| कॉस्टीलियन | स्पेन के एक क्षेत्र-विशेष की भाषा-संस्कृति |

‘ स्त्री पैदा नहीं होती, बनाई जाती है।’

सिमोन द बुआ

कहानी

# लड़की

**रामदरश मिश्र**

उसने एक बार देखा, फिर सिर झुकाकर पढ़ने लगी। उसका बड़ा भाई सुड़क-सुड़ककर दूध पीता रहा।

मैंने पूछा, “क्यों सावित्री, तुम दूध पी चुकी ?” उसने मेरी ओर देखा, कुछ बोली नहीं, पढ़ने लगी।

जाड़े की सुबह थी। घर के सामने धूप निकल आई थी। मैं चारपाई पर बैठा हुआ एक किताब पढ़ रहा था और सामने चटाई पर धूप में मेरे भतीजे के दोनों बच्चे अपना-अपना काम कर रहे थे। लड़का स्वेटर पहने था, पाँव में जूता था। लड़की के पैर नंगे थे और वह केवल सूती फ्रॉक पहने थी।

“ए कोंचता क्यों है, पढ़ने दे।” लड़की चिल्लाई।

मैंने देखा - लड़का उसे कोंच रहा था, उसकी कलम छीन रहा था। “अपने तो खुद पढ़ता नहीं, मुझे भी नहीं पढ़ने देता। दिन-रात शैतानी करता है।”

लड़की ने लड़के को थोड़ा परे ढकेल दिया। वह थोड़ा लुढ़क गया। वह उठा और बहन के बाल पकड़कर खींचने लगा। लड़की ज़ोर-ज़ोर से चीखने लगी।

मुझे गुस्सा आ रहा था। इच्छा हुई कि उठकर तीन-चार झापड़ इस बदतमीज़ लौंडे को रसीद कर दूँ, लेकिन अपनी हैसियत समझकर चुप रह गया। दो दिन के लिए मेहमान की तरह

लेखक ने लड़के को केवल डाँटा। क्यों ?

शहर से यहाँ आया हूँ, मारने पर पता नहीं क्या प्रतिक्रिया हो माँ-बाप की। इसलिए केवल डाँटा - "छोड़-छोड़, क्यों उसे मार रहा है ?"

वह मेरी परवाह किए बिना अपना काम करता रहा। बच्चों की माँ किसी काम से बाहर निकली, दृश्य देखा और चुपचाप फिर अंदर चली गई।

मैंने सोचा - शायद माँ को किसी बात की चिंता नहीं है। मैं ही कुछ करूँ।

तब तक लड़की ने आजिज़ आकर लड़के की बाँह पर दाँत गड़ा दिए।

"अरे बाप ! मार डाला।"

वह चिल्लाने लगा। माँ जाते-जाते मुड़ पड़ी। झपटकर आई और बच्चे को गोद में उठा लिया।

"क्या हुआ, रे ?"

"इसने काट लिया, अरे बाप रे !"

वह और भी ज़ोर से चिल्लाने लगा। माँ ने लड़की की पीठ पर तीन-चार लात जमाते हुए पूछा, "क्यों री चुड़ैल, इसे काट क्यों लिया ?"

लड़की सुबकती हुई बोली, "मैंने काटा नहीं। यह मेरी कलम छीन रहा था। बाल खींच रहा था, छोड़ ही नहीं रहा था। छुड़ाने के लिए मैंने हल्के से दाँत गड़ा दिए।"

"नहीं माँ, इसने जोर से काटा है।"

"चुड़ैल कहीं की ! कलम छीन रहा था तो दे दिया होता।
पढ़-लिखकर लाट-गवन्नर बनेगी क्या ?"

माँ ने कलम छीनकर लड़के को दे दिया। उसे पुचकारते हुए बोली,
"लो लिखो, मेरे लाल !"

"हाँ, लिखो मेरे लाल !" लड़की ने मुँह चिढ़ाते हुए कहा, "इसे लिखना भी आता है ? रोज़ क्लास में पिटता है।"

"चुप कर और चल काम कर। बैठ गई सवेरे-सवेरे पोथी-पन्ना लेकर। राख पड़ी है खेत में फेंक आ।"

लड़की उठी। थोड़ी देर बाद वह सिर पर राख की खाँची उठाए हुए खेत की ओर जा रही थी और साहबज़ादे कलम-वलम फेंककर खेलने चले गए।

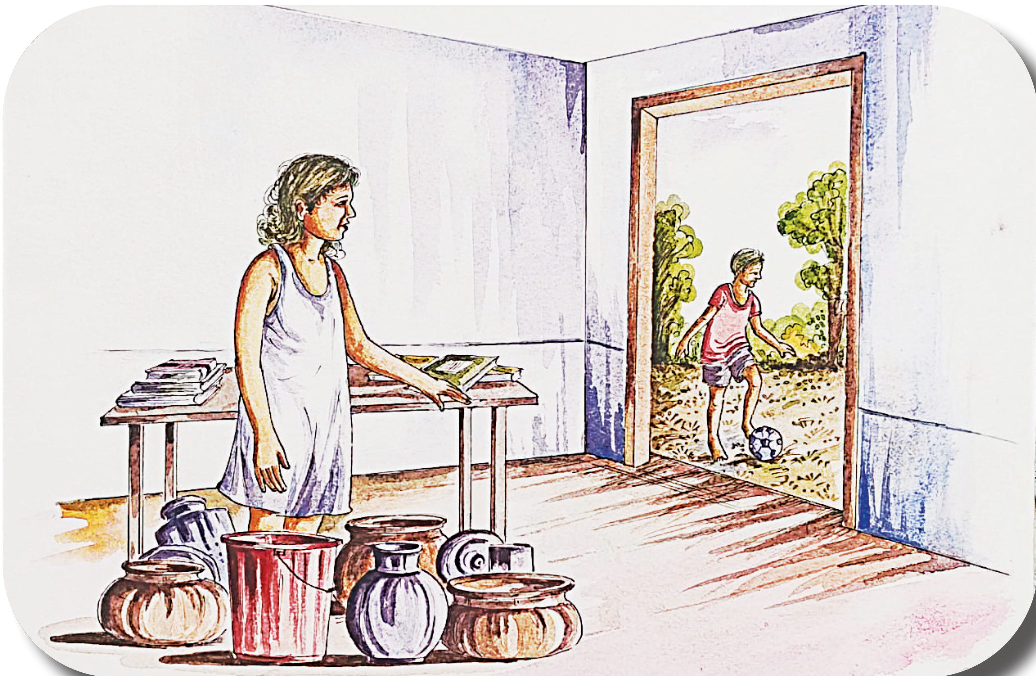

दोपहर हुई। लड़की माँ के इशारों पर भाग-भागकर घर का काम करती रही। मैं अपने भतीजे के साथ खाना खाने बैठा तो देखा- सामने लड़की चुपचाप बैठी है। मैंने पूछा, "सावित्री, तुमने अब तक खाना नहीं खाया क्या ? चेहरा उतरा-उतरा सा है। आओ, तुम भी बैठ जाओ।"

"अरे वह बाद में खा लेगी। खाइए, आप लोग।"

मैंने भतीजे की ओर देखा, उसके चेहरे पर कोई प्रतिक्रिया नहीं थी। तब तक लड़का कहीं से आ गया धूल-धूसरित-सा। चिल्लाने लगा, "अरे बड़े जोर की भूख लगी है। माँ खाने को दो।"

"आओ-आओ, मेरे लाल ! जल्दी से मुँह-हाथ धो लो, तब तक खाना परस रही हूँ। "

**"अरे वह बाद में खा लेगी। खाइए आप लोग।" यहाँ माँ का कौन-सा मनोभाव प्रकट होता है?**

उसने सामने पड़े कटोरे को पाँव से मारा - झन्नाह..... और पाँव पटकता हुआ बोला, "नहीं, पहले खाने को दो, भूख लगी है।"

"अच्छा भाई, गुस्सा मत करो। लो, खा लो।" माँ ने झट से उसके सामने थाली रख दी।

भतीजे के निर्विकार भाव का कारण क्या होगा ?

मैंने भतीजे की ओर फिर देखा। वह निर्विकार भाव से खाए जा रहा था। लड़की चुपचाप मार खाई-सी अपनी जगह सिमटी-सिकुड़ी बैठी थी। मुझे यह सब बहुत अजीब लग रहा था। लड़की को उदास देखकर खाने की इच्छा नहीं हो रही थी, बस किसी तरह कौर निगल रहा था।

खा-पीकर बरामदे में लेटा था। लड़का वहीं खेल रहा था। एकाएक चिल्लाने लगा, "अरे माई रे, पेट में दरद हो रहा है।"

"टट्टी जाओगे ?"

"नहीं, दरद हो रहा है।"

मैंने कहा, "लगता है कुछ गड़बड़-सड़बड़ खा लिया है।"

"गड़बड़-सड़बड़ तो कुछ नहीं खाया होगा। हम लोग जो खा रहे हैं, वही यह भी खा रहा है।" बाप ने बयान किया।

"तो ज़्यादा खा लिया होगा !"

"अरे कहाँ ? यह कमबख्त तो खाता ही नहीं है, बस ठूँगता है।"

"हूँ," मैंने कहा, "कल से ही इसे ठूँगते हुए देख रहा हूँ।"

"अरे बहुत तेज़ दरद हो रहा है।" वह चिल्लाया।

"सावित्री !"

"हाँ, बाबूजी !"

कहती हुई वह भागी-भागी बाहर आई। उसके हाथ में दाल-भात से भरा कटोरा था। शायद वह खा रही थी, खाते-खाते भाग आई थी।

"देख, खाना-वाना बाद में कर लेना, ज़रा भागकर वैद्य जी को बुला तो ला। तब तक मैं बनिया के यहाँ जा रहा हूँ सोडा लेने।" फिर वहीं से चिल्लाकर अपनी पत्नी से कहा ,"अरे मुन्ने को सँभालना और थोड़ा पानी गरम करके रखना, उसके पेट में दरद हो रहा है। "

मैंने कटोरे को देखा -- दाल और मोटा भात। लेकिन हम लोगों को तो बढ़िया चावल का भात मिला था। और इस लड़की के लिए सब्जी-वब्जी कुछ नहीं।

भतीजा बनिया के यहाँ से झल्लाया हुआ लौटा, "साला कुछ नहीं रखता। दुकान खोल रखी है और जो चीज़ माँगो, वही नदारद।"

तब तक सावित्री आ गई।

"बाबूजी, वैद्य जी तो कहीं गए हुए हैं।"

"अरे यह कुलच्छिनी जहाँ जाएगी वहीं काम नहीं होगा।" माँ ने टिप्पणी जड़ी।

लड़का चिल्लाए जा रहा था।

"रुको-रुको तुम लोग, परेशान न हों। शायद मेरे पास पेट-दरद की कुछ गोलियाँ हों।"

गोलियाँ मिल गईं। खिलाया। लड़का राहत अनुभव करने लगा। उसे नींद आने लगी। माँ उसे लेकर अंदर चली गई। और सावित्री से कहती गई - खाकर जूठे बरतन हैं इन्हें माँज डालना।

मैंने सावित्री को गोद में उठा लिया। इस लड़की के लिए मैं भीतर तक आर्द्र हो आया था। उसे प्यार किया, फिर कहा, "तुम्हारा खाना पड़ा है, खा लो, बेटे!"

गोद से उतरकर उसने कटोरा उठा लिया। धीरे-धीरे खाना खाने लगी।

लड़की के प्रति लेखक का मन क्यों आर्द्र हो उठा होगा ?

एक निरुद्‌वेग उदासी उसके चेहरे से चिपकी हुई थी।

मैंने कहा, "सावित्री बेटे !"उसने खाते-खाते चेहरा ऊपर उठाया।

जैसे कह रही हो, हाँ, कहिए।

"तुम्हें बुरा नहीं लगता ?"

"क्या, दादा जी ?"

"अरे यही, जो तुम्हारे साथ होता है।"

उसने इनकार में सिर हिलाया।

"क्यों ?"

"लड़की हूँ न।"

मैं भीतर तक चरमरा गया।

लड़की उसी निरुद्‌वेग भाव से खाती रही।

**" लड़की हूँ न " – लड़की का यह कथन किस सामाजिक विसंगति की ओर इशारा करता है ?**

## अनुगामी कार्य

**गुज़रें - समझें : -**

**1. पाठभाग से पुनरुक्त शब्द छाँटकर लिखें।**

जैसे : सुड़क-सुड़क

**2. निम्नलिखित कथन किन-किन पात्रों से संबंधित हैं ?**

- ☞ अपने तो खुद पढ़ता नहीं, मुझे भी नहीं पढ़ने देता।
- ☞ छोड़-छोड़ क्यों उसे मार रहा है ?
- ☞ पढ़-लिखकर लाट-गवन्नर बनेगी क्या ?
- ☞ बाल खींच रहा था, छोड़ ही नहीं रहा था।
- ☞ अरे वह बाद में खा लेगी। खाइए, आप लोग।
- ☞ लगता है कुछ गड़बड़-सड़बड़ खा लिया है।
- ☞ दुकान खोल रखी है और जो चीज़ माँगे, वही नदारद।
- ☞ तुम्हें बुरा नहीं लगता।

**3. पठित भाग से लड़का और लड़की से संबंधित कार्यकलापों को सूचीबद्ध करें।**

| लड़का | लड़की |
|---|---|
| सुड़क-सुड़क दूध पीता है। | सिर झुकाकर पढ़ती है। |
| | |
| | |
| | |

## परखें - पहचानें : -

1. लड़का और लड़की के प्रति घरवालों का व्यवहार कैसा था ? चर्चा करें। इसपर अपना विचार प्रकट करते हुए एक लघु लेख तैयार करें।

2. भतीजे के घर पर हुए अनुभवों पर चिंतित होकर लेखक ने उस दिन की डायरी लिखी। वह डायरी तैयार करें।

3. यह वाक्य पढ़ें और रेखांकित शब्द पर ध्यान दें।

मैंने भतीजे को देखा।

यह रेखांकित शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयोग में लाया गया है, इसे सर्वनाम कहते हैं।

निम्नलिखित वाक्यों से परसर्ग युक्त शब्द चुनें और लिखें :

| वाक्य | परसर्ग युक्त शब्द | सर्वनाम + परसर्ग |
|---|---|---|
| उसने एक बार देखा। | उसने | वह + ने |
| उसका बड़ा भाई दूध पी रहा था। | | |
| उसकी कलम छीन रहा था। | | |
| मुझे गुस्सा आ रहा था। | | |
| माँ उसे लेकर अंदर चली गई है। | | |
| यही तुम्हारे साथ होता है। | | |
| मेरी कलम छीन रहा था। | | |
| तुमने अब तक खाना नहीं खाया। | | |

सर्वनाम के साथ परसर्ग (कारक चिह्न) के लगने पर
सर्वनाम शब्दों में परिवर्तन होता है।
जैसे :- वह + का = उसका, वे + ने = उन्होंने आदि

## खोजें - अपनाएँ : -

बेटा-बेटी हों एक समान - इस विषय पर संगोष्ठी चलाएँ।

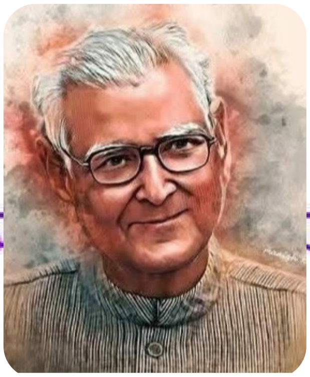

## रामदरश मिश्र

| | | |
|---|---|---|
| जन्म | : | 1924, गोरखपुर , उत्तरप्रदेश |
| प्रमुख रचनाएँ | : | बसंत का एक दिन, खाली घर, अतीत का विष, दिनचर्या |
| विशेषताएँ | : | कवि , कहानीकार, उपन्यासकार, निबंधकार |
| पुरस्कार | : | पद्मश्री, सरस्वती सम्मान, साहित्य अकादमी पुरस्कार |
| मृत्यु | : | 2025 |

## मदद लें

| | |
|---|---|
| भतीजा | भाई का बेटा |
| कोंचना | चुभाना |
| ढकेलना | धक्का देना |
| लुढ़कना | to scroll |
| झापड़ | थापड़ |
| रसीद करना | देना |
| हैसियत | हालत |
| आजिज़ | तंग |
| दाँत गड़ाना | काटना |
| लात जमाना | पैर से मारना |
| चुड़ैल | राक्षसी |
| खाँची | टोकरा |
| कौर निगलना | मुश्किल से खाना |
| बयान | ज़िक्र |
| टूँगना | छोटे-छोटे टुकड़ों में खाना |
| नदारद | गायब, खाली |
| टिप्पणी जड़ना | बुरा कहना |
| माँजना | साफ़ करना |
| निरुद्वेग | चिंता रहित |
| चरमरा जाना | टूट जाना |

"कबीर भारतीय आत्मा की वह आवाज़ हैं
जो आज भी हमें भीतर से जगाती हैं।"

रवींद्रनाथ टैगोर

कविता

# दोहे

कबीरदास

जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि है मैं नाहिं।
सब अँधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्यां मांहि॥

अहंकार के मिट जाने पर मनुष्य में क्या परिवर्तन आता है?

सब धरती कागद करूँ, लेखनी सब बनराय।
सात समुंद की मसि करूँ, गुरु गुण लिखा न जाय॥

'गुरु गुण लिखा न जाय' - क्यों?

मूरख संग न कीजिए, लोहा जलि न तिराइ।
कदली-सीप-भुवंग मुख, एक बूंद तिहँ भाइ॥

बुरी संगति का परिणाम क्या होता है?

कथनी कथी तो क्या भया, जौ करनी नाँ ठहराइ।
कालबूत के कोट ज्यौं, देखत ही ढहि जाइ॥

कथनी और करनी के बारे में कबीर का मत क्या है ?

जो जल बाढ़ै नाव में, घर में बाढ़ै दाम।
दोऊ हाथ उलीचिए, यही सयानो काम॥

समझदार व्यक्ति का लक्षण क्या है ?

काल करै सो आज करु, आज करै सो अब्ब।
पल में परलै होयगी, बहुरि करेगा कब्ब॥

इस दोहे के माध्यम से कवि क्या संदेश देते हैं ?

तत्व पढ़ें :

- अहंकार त्यागने से ज्ञान प्राप्त होता है।
- गुरु की महिमा वर्णनातीत है।
- मूर्ख की संगति से दूर रहना है।
- कथनी और करनी में समानता होनी है।
- परोपकार से महत्व बढ़ता है।
- समय किसीके लिए नहीं रुकता।

## अनुगामी कार्य

### गुज़रें - समझें : -

1. समानार्थी शब्द दोहे से ढूँढ़कर लिखें।

   भीतर, कागज़, कलम, धन, केला, साँप, बुद्धिहीन, कर्म, टिकना, कल

### परखें - पहचानें : -

1. समान आशय वाली पंक्तियाँ दोहे से चुनकर लिखें।

   - *मूर्खों की संगति से दूर रहना चाहिए।*
   - *ज्ञान प्राप्ति के लिए अहंकार को मिटाना है।*
   - *गुरु की महिमा असीम है।*
   - *कल का काम आज ही करना है।*
   - *व्यक्ति के वचन और कर्म में मेल होना चाहिए।*
   - *जीवन में परोपकार का महत्व है।*

2. पठित दोहों के आशय लिखें।

### खोजें - अपनाएँ : -

1. दोहों का आलाप करें।
2. कबीर के दोहों का संकलन करें।

# कबीरदास

| | | |
|---|---|---|
| जन्म | : | काशी, उत्तर प्रदेश |
| प्रमुख रचनाएँ | : | बीजक – (साखी, सबद, रमैनी) |
| विशेषताएँ | : | भक्तिकाल के निर्गुण ज्ञानाश्रयी कवि |
| | | समाजसुधारक |
| | | क्रांतिकारी संत कवि |
| मृत्यु | : | मगहर, उत्तरप्रदेश |

*दोहा - एक छंद। दो पंक्तियों की कविता। प्रत्येक पंक्ति में दो-दो चरण। हर दोहा अपने में पूर्ण।*

## मदद लें

| | |
|---|---|
| हरि | ज्ञान |
| मैं | अहंकार |
| अँधियारा | अज्ञान |
| मांहि | भीतर |
| धरती | पृथ्वी |
| कागद | कागज़ |
| लेखनी | कलम |
| बनराय | जंगलों के सारे पेड़ |
| मसि | स्याही |
| मूरख | बुद्धिहीन |
| तिराइ | सुधारना |
| कदली | केला |
| सीप | शंख |
| भुवंग | साँप |
| कथनी | कहने वाली बातें |
| कथी | कहना |
| करनी | कर्म |
| नाँ | नहीं |

| | |
|---|---|
| ठहराई | टिकना |
| कालबूत | कच्ची मिट्टी |
| कोट | महल |
| ढहि जाय | टूट जाना |
| बाढ़ै | भर जाना |
| दाम | धन |
| उलीचिए | दोनों हाथों से खाली करना |
| सयानो | समझदार |
| काल | कल |
| परलै | प्रलय |
| बहुरि | फिर से |

'अतीत की स्मृतियाँ ही भविष्य के निर्माण की प्रेरणा बनती हैं'

रामधारी सिंह 'दिनकर'

संस्मरणात्मक रेखाचित्र

# सोना हिरनी

महादेवी वर्मा

सोना की आज अचानक स्मृति हो आने का कारण है। मेरे परिचित स्वर्गीय डाक्टर धीरेंद्र नाथ बसु की पौत्री सुस्मिता ने लिखा है: ' गत वर्ष अपने पड़ोसी से मुझे एक हिरन मिला था। बीते कुछ महीनों में हम उससे बहुत स्नेह करने लगे हैं। परंतु अब मैं अनुभव करती हूँ कि सघन जंगल से संबद्ध रहने के कारण तथा अब बड़े हो जाने के कारण उसे घूमने के लिए अधिक विस्तृत स्थान चाहिए।'

'सोना की आज अचानक स्मृति आई' - कारण क्या है ?

'क्या कृपा करके आप उसे स्वीकार करेंगी? सचमुच मैं आपकी बहुत आभारी हूँगी, क्योंकि आप जानती हैं, मैं उसे ऐसे व्यक्ति को नहीं देना चाहती, जो उससे बुरा व्यवहार करे। मेरा विश्वास है, आपके यहाँ उसकी भली-भाँति देखभाल हो सकेगी।'

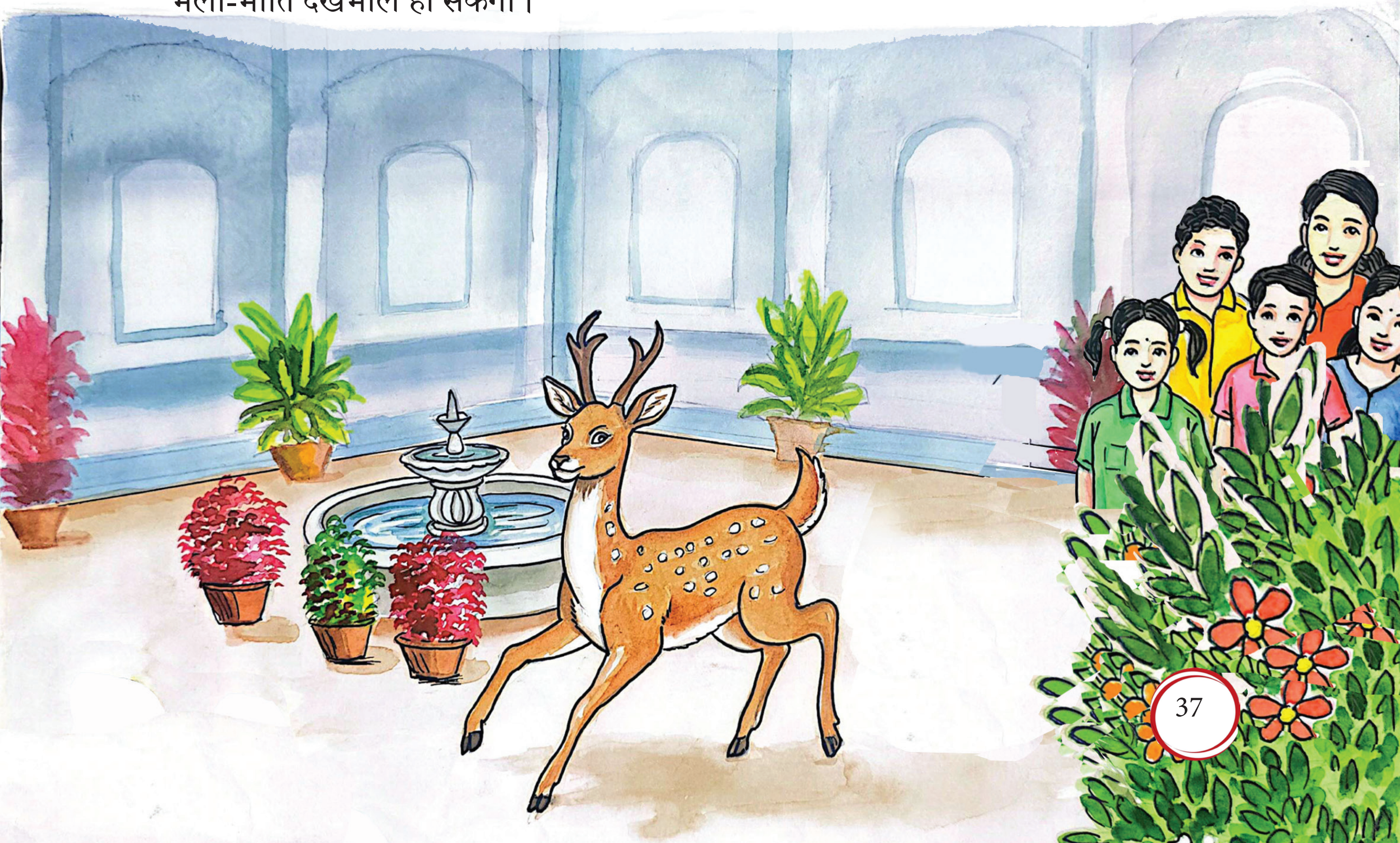

सोना का शब्दचित्र लेखिका ने कैसे खींचा है ?

सोना की माँ की मृत्यु कैसे हुई ?

कई वर्ष पूर्व मैंने निश्चय किया कि अब हिरन नहीं पालूँगी, परंतु उस नियम को भंग किए बिना इस कोमल-प्राण जीव की रक्षा संभव नहीं है।

सोना भी इसी प्रकार अचानक आई थी, परंतु वह तब तक अपनी शैशवावस्था भी पार नहीं कर सकी थी। सुनहरे रंग के रेशमी लच्छों की गाँठ के समान उसका कोमल लघु शरीर था। छोटा-सा मुँह और बड़ी-बड़ी पानीदार आँखें। देखती थी तो लगता था कि अभी छलक पड़ेंगी। उनमें प्रसुप्त गति की बिजली की लहर आँखों में कौंध जाती थी। सब उसके सरल शिशु रूप से इतने प्रभावित हुए कि किसी चंपकवर्णा रूपसी के उपयुक्त सोना, सुवर्णा, सुवर्णलेखा आदि नाम उसका परिचय बन गए।

परंतु उस बेचारे हरिण-शावक की कथा तो मिट्टी की ऐसी व्यथा कथा है, जिसे मनुष्य की निष्ठुरता गढ़ती है। प्रशांत वनस्थली में जब अलस भाव से रोमंथन करता हुआ मृग समूह शिकारियों की आहट से चौंककर भागा, तब सोना की माँ सद्यः प्रसूता होने के कारण भागने में असमर्थ रही। सद्यः जात मृगशिशु तो भाग नहीं सकता था, अतः मृगी माँ ने अपनी संतान को अपने शरीर की ओट में सुरक्षित रखने के प्रयास में प्राण दिए।

पता नहीं, दया के कारण या कौतुकप्रियता के कारण शिकारी मृत हिरनी के साथ उसके रक्त से सने और ठंडे स्तनों से चिपटे हुए शावक को जीवित उठा लाए। उनमें से किसी के परिवार की सदय गृहिणी और बच्चों ने उसे पानी मिला दूध पिला-पिलाकर दो-चार दिन जीवित रखा। सुस्मिता वसु के समान ही किसी बालिका को मेरा स्मरण हो आया और वह उस अनाथ शावक को मुमूर्ष अवस्था में मेरे पास ले आई। शावक अवांछित तो था ही,

उसके बचने की आशा भी धूमिल थी, परंतु मैंने उसे स्वीकार कर लिया। स्निग्ध सुनहले रंग के कारण सब उसे सोना कहने लगे। दूध पिलाने की शीशी, ग्लूकोज़, बकरी का दूध आदि सब कुछ एकत्र करके, उसे पालने का कठिन अनुष्ठान आरंभ हुआ।

उसका मुख इतना छोटा-सा था कि उसमें शीशी का निपल समाता ही नहीं था उस पर उसे पीना भी नहीं आता था। फिर धीरे-धीरे उसे पीना ही नहीं, दूध की बोतल पहचानना भी आ गया। आँगन में कूदते-फाँदते हुए भी भक्तिन को बोतल साफ़ करते देखकर वह दौड़ आती और अपनी तरल चकित आँखों से उसे ऐसे देखने लगती, मानो वह कोई सजीव मित्र हो।

**महादेवी के पास सोना कैसे पहुँच गई ?**

उसने रात में मेरे पलंग के पाए से सटकर बैठना सीख लिया था, पर वहाँ गंदा न करने की आदत कुछ दिनों के अभ्यास से पड़ सकी। अँधेरा होते ही वह मेरे कमरे में पलंग के पास आ बैठती और फिर सवेरा होने पर ही बाहर निकलती। उसके दिन भर का कार्यकलाप भी एक प्रकार से निश्चित था। विद्यालय और छात्रावास की विद्यार्थिनियों के निकट पहले वह कौतुक का कारण रही, परंतु कुछ दिन बीत जाने पर वह उनकी ऐसी प्रिय साथिन बन गई, जिसके बिना उनका किसी काम में मन नहीं लगता था।

**महादेवी ने सोना को कैसे पाला ?**

दूध पीकर और भीगे चने खाकर सोना कुछ देर कंपाउंड में चारों पैरों को संतुलित कर चौकड़ी भरती। फिर वह छात्रावास पहुँचती और प्रत्येक कमरे के भीतर, बाहर निरीक्षण करती। सोना

**महादेवी के साथ सोना का व्यवहार किस प्रकार था ?**

के पहुँच जाने पर छात्राएँ उसके माथे पर कुमकुम का बड़ा-सा टीका लगा देतीं , कोई गले में रिबन बाँध देती और कोई पूजा के बताशे खिला देती। मेस में उसके पहुँचते ही छात्राएँ ही नहीं, नौकर-चाकर तक दौड़ आते और सभी उसे कुछ-न-कुछ खिलाने को उतावले रहते, परंतु उसे बिस्कुट को छोड़कर कम खाद्य पदार्थ पसंद थे। छात्रावास का जागरण और जलपान अध्याय समाप्त होने पर वह घास के मैदान में कभी दूब चरती और कभी उस पर लोटती रहती। मेरे भोजन के ठीक समय पर वह भीतर आ जाती और तब तक मुझसे सटी खड़ी रहती जब तक मेरा खाना समाप्त न हो जाता। उसे कच्ची सब्जी अधिक भाती थी।

**सोना के साथ छात्राओं का व्यवहार कैसा था ?**

मेरे प्रति स्नेह-प्रदर्शन के उसके कई प्रकार थे। बाहर खड़े होने पर वह सामने या पीछे से छलाँग लगाती और मेरे सिर के ऊपर से दूसरी ओर निकल जाती। प्रायः देखनेवालों को भय होता था कि उसके पैरों से मेरे सिर पर चोट न लग जाए,

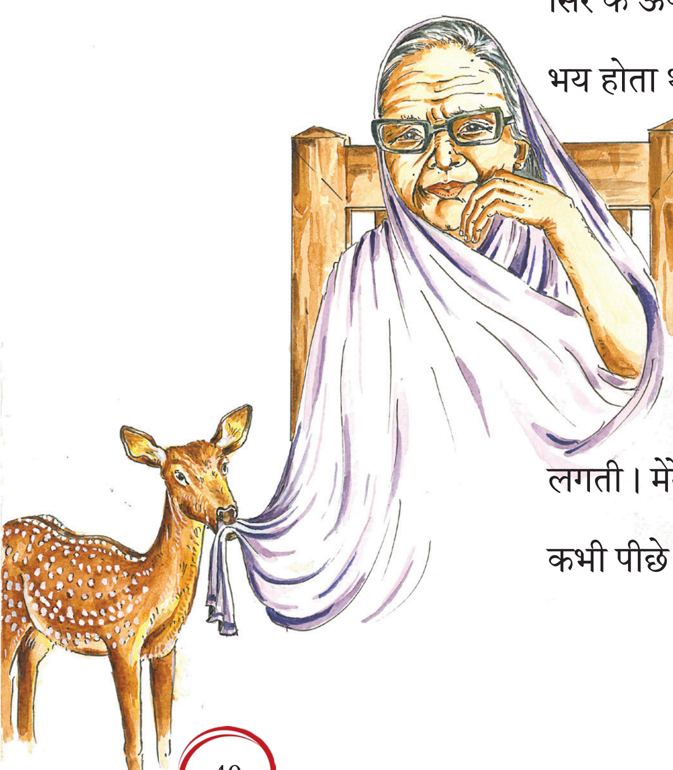

परंतु वह पैरों को इस प्रकार सिकोड़े रखती थी और मेरे सिर को इतनी ऊँचाई से लाँघती थी कि चोट लगने की कोई संभावना ही नहीं रहती थी। भीतर आने पर वह मेरे पैरों से अपना शरीर रगड़ने लगती। मेरे बैठे रहने पर वह साड़ी का छोर मुँह में भर लेती और कभी पीछे चुपचाप खड़े होकर चोटी ही चबा डालती।

**महादेवी के प्रति सोना का स्नेह-प्रदर्शन किस प्रकार रहा ?**

डाँटने पर वह अपनी बड़ी गोल और चकित आँखों में ऐसी अनिर्वचनीय जिज्ञासा भरकर एकटक देखने लगती कि हँसी आ जाती।

कुत्ता स्वामी और सेवक का अंतर जानता है और स्वामी के स्नेह या क्रोध की प्रत्येक मुद्रा से परिचित रहता है। स्नेह से बुलाने पर वह गद्‌गद्‌ होकर निकट आ जाता है और क्रोध करते ही सभीत और दयनीय बनकर दुबक जाता है। पर हिरन यह अंतर नहीं जानता, अतः उसका अपने पालनेवाले से डरना कठिन है। यदि उस पर क्रोध किया जाए तो वह अपनी चकित आँखों में और अधिक विस्मय भरकर पालनेवाले की दृष्टि से दृष्टि मिलाकर खड़ा रहेगा- मानो पूछता हो, क्या यह उचित है ? वह केवल स्नेह पहचानता है, जिसकी स्वीकृति जताने के लिए उसकी विशेष चेष्टाएँ हैं।

**" वह केवल स्नेह पहचानता है जिसकी स्वीकृति जताने के लिए उसकी विशेष चेष्टाएँ हैं।"--**
**वे चेष्टाएँ कौन-कौन सी हैं ?**

मेरी बिल्ली गोधूली, कुत्ते हेमंत-वसंत, कुत्ती फ़्लोरा सब पहले इस नए अतिथि को देखकर रुष्ट हुए, परंतु सोना ने थोड़े ही दिनों में सबसे सख्य स्थापित कर लिया। फिर तो वह घास पर लेट जाती और कुत्ते-बिल्ली उस पर उछलते-कूदते रहते।

**" परन्तु सोना ने थोड़े ही दिनों में सबसे सख्य स्थापित कर लिया।"**
**यहाँ सोना के चरित्र की कौन सी विशेषता प्रकट है ?**

वर्ष भर का समय बीत जाने पर सोना हरिण शावक से हरिणी में परिवर्तित होने लगी। उसके शरीर के पीताभ रोएँ ताम्रवर्णी झलक देने लगे।

टाँगें अधिक सुडौल और खुरों के कालेपन में चमक आ गई। ग्रीवा अधिक बंकिम और लचीली हो गई। पीठ में भराव वाला उतार-चढ़ाव और स्निग्धता दिखाई देने लगी।

संभवतः अब उसमें वन तथा स्वजाति का स्मृति-संस्कार जागने लगा था। प्रायः सूने मैदान में वह गर्दन ऊँची करके किसी की आहट की प्रतीक्षा में खड़ी रहती। वासंती हवा बहने पर यह मूक प्रतीक्षा और अधिक मार्मिक हो उठती।

इसी बीच फ़्लोरा ने भक्तिन की कुछ अँधेरी कोठरी के एकांत कोने में चार बच्चों को जन्म दिया और वह खेल के संगियों को भूल कर अपनी नवीन सृष्टि के संरक्षण में व्यस्त हो गई। एक-दो दिन सोना अपनी सखी को खोजती रही, फिर उसे इतने लघु जीवों से घिरा देख कर उसकी स्वाभाविक चकित दृष्टि गंभीर विस्मय से भर गई।

**'उसकी स्वाभाविक चकित दृष्टि गंभीर विस्मय से भर गई'- कारण क्या है ?**

उसी वर्ष गर्मियों में मेरी बद्रीनाथ-यात्रा का कार्यक्रम बना। प्रायः मैं अपने पालतू जीवों के कारण प्रवास कम करती हूँ। उनकी देखरेख के लिए सेवक रहने पर भी मैं उन्हें छोड़कर आश्वस्त नहीं हो पाती। भक्तिन, अनुरूप (नौकर) आदि तो साथ जाने वाले थे ही, पालतू जीवों में से मैंने फ़्लोरा को साथ ले जाने का निश्चय किया, क्योंकि वह मेरे बिना रह नहीं सकती थी। छात्रावास बंद था, अतः सोना के नित्य नैमित्तिक कार्य-कलाप भी बंद हो गए थे। मेरी उपस्थिति का भी अभाव था, अतः उसके आनंदोल्लास के लिए भी अवकाश कम था। सोना की सहज चेतना में मेरी यात्रा जैसी स्थिति का बोध था, न प्रत्यावर्तन का। इसी से उसकी निराशा, जिज्ञासा और विस्मय का अनुमान मेरे लिए सहज था।

पैदल जाने-आने के निश्चय के कारण बद्रीनाथ की यात्रा में ग्रीष्मावकाश समाप्त हो गया। 2 जुलाई को लौटकर जब मैं बँगले के द्वार

पर आ खड़ी हुई, तब बिछुड़े हुए पालतू जीवों में कोलाहल होने लगा। गोधूली कूदकर कंधे पर आ बैठी। हेमंत-वसंत मेरे चारों ओर परिक्रमा करके हर्ष की ध्वनियों में मेरा स्वागत करने लगे, पर मेरी दृष्टि सोना को खोजने लगी। सोना कहाँ है, पूछने पर माली आँखें पोंछने लगा और चपरासी, चौकीदार एक-दूसरे का मुख देखने लगे। वे लोग, आने के साथ ही मुझे कोई दुःखद समाचार नहीं देना चाहते थे, परंतु माली की भावुकता ने बिना बोले ही उसे दे डाला।

**" परंतु माली की भावुकता ने बिना बोले ही उसे दे डाला।" इससे तात्पर्य क्या है ?**

ज्ञात हुआ कि छात्रावास के सन्नाटे और फ़्लोरा के तथा मेरे अभाव के कारण सोना इतनी अस्थिर हो गई थी कि इधर-उधर कुछ खोजती-सी वह प्रायः कंपाउंड से बाहर निकल जाती थी। इतनी बड़ी हिरनी को पालनेवाले तो कम थे, परंतु उसमें खाद्य और स्वाद प्राप्त करने के इच्छुक व्यक्तियों का बाहुल्य था। इसी आशंका से माली ने उसे मैदान में एक लंबी रस्सी से बाँधना आरंभ कर दिया था।

एक दिन न जाने किस स्तब्धता की स्थिति में बंधन की सीमा भूलकर बहुत ऊँचाई तक उछली और रस्सी के कारण मुख के बल धरती पर आ गिरी। वही उसकी अंतिम साँस और अंतिम उछाल थी।

**'पर संयोग से फिर हिरन ही पालना पड़ रहा है' क्यों ?**

सब उस सुनहले रेशम की गठरी के शरीर को गंगा में प्रवाहित कर आए और इस प्रकार किसी निर्जन वन में जन्मी और जन-संकुलता में पली सोना की करुण कथा का अंत हुआ। सब सुनकर मैंने निश्चय किया था कि हिरन नहीं पालूँगी, पर संयोग से फिर हिरन ही पालना पड़ रहा है।

# अनुगामी कार्य

## गुज़रें - समझें : -

1. **पाठभाग से शब्द युग्म ढूँढ़ें।**

   जैसे : उतार-चढ़ाव, नौकर-चाकर

2. **सोना की नटखट चेष्टाओं को ढूँढ़कर लिखें।**

   जैसे : बच्चों के साथ खेलना, छलाँग लगाना

3. **सोना के चरित्र की विशेषताओं को सूचित करने वाले वाक्य या वाक्यांश पाठभाग से चुनकर लिखें।**

   जैसे : सबसे सख्य स्थापित कर लिया।

4. **घटनाओं को क्रमबद्ध करें।**

   ⇨ *लेखिका का बद्रीनाथ जाना।*
   
   ⇨ *सोना को स्वीकार करना।*
   
   ⇨ *सोना की मृत्यु।*
   
   ⇨ *छात्रावास की विद्यार्थिनियों के साथ दोस्ती।*
   
   ⇨ *घंटी बजते ही प्रार्थना के लिए आना।*
   
   ⇨ *छात्रावास से बिस्कुट खाना।*
   
   ⇨ *लेखिका के पीछे से छलांग लगाना।*
   
   ⇨ *सोना की माँ की मृत्यु।*

## परखें - पहचानें : -

1. छात्रावास में सोना के कार्यकलापों का वर्णन करें।
2. 'कई वर्ष पूर्व मैंने निश्चय किया कि अब हिरन नहीं पालूँगी ?' -- महादेवी वर्मा ने ऐसा निश्चय क्यों किया ? उन्होंने वह निश्चय क्यों बदल डाला ?
3. 'सोना छात्रावास पहुँचती और प्रत्येक कमरे के भीतर, बाहर निरीक्षण करती।' सोना के नटखटपन देखकर छात्रावास के बच्चों के बीच की बातचीत लिखें।
4. महादेवी वर्मा ने हिरण न पालने का निश्चय किया था। लेकिन सुस्मिता वसु के पत्र के कारण उन्हें अपना निर्णय बदलना पड़ा। इसका ज़िक्र करते हुए महादेवी वर्मा सुस्मिता वसु को पत्र लिखती हैं। वह पत्र लिखें।
5. यह वाक्य पढ़ें और रेखांकित शब्दों पर ध्यान दें।

   *सुनहरे* रंग के *रेश्मी* लच्छों की गाँठ के समान उसका *लघु* शरीर है।

   विशेषण शब्द हैं – सुनहरे, रेश्मी, लघु

   नीचे दिए वाक्यों से विशेषण शब्द चुनें।

   1. सब उसके सरल शिशु रूप से प्रभावित हुए।
   2. प्रशांत वनस्थली में अलस भाव से रोमंथन करता हुआ मृग समूह।
   3. उसके रक्त से सने ठंडे स्तनों से चिपटे हुए शावक।
   4. अपनी तरल चकित आँखों से उसे देखने लगती।
   5. वह अनाथ शावक को मुमूर्ष अवस्था में मेरे पास ले आई।

जो शब्द, संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं उन्हें विशेषण कहते हैं।

# महादेवी वर्मा

| | | |
|---|---|---|
| जन्म | : | 1907, फर्रुखाबाद, उत्तरप्रदेश |
| प्रमुख रचनाएँ | : | यामा (नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत), दीपशिखा<br>अतीत के चलचित्र, शृंखला की कड़ियाँ |
| विशेषताएँ | : | छायावाद की प्रसिद्ध् कवयित्री,<br>संस्मरणकार, रेखाचित्रकार, निबंधकार |
| पुरस्कार | : | पद्मविभूषण, पद्मभूषण, ज्ञानपीठ पुरस्कार |
| मृत्यु | : | 1987, प्रयागराज, उत्तरप्रदेश |

## मदद लें

| | |
|---|---|
| आभार | धन्यवाद, कृतज्ञता |
| सुनहरे रंग | सोने जैसा रंग |
| हरिण शावक | हिरन का बच्चा |
| वनस्थली | जंगल का प्रदेश |
| सद्य: प्रसूता | अभी-अभी जन्म देने वाली |
| मुमूर्ष | जो मरने के बहुत समीप हो |
| कौतुकप्रियता | जिज्ञासा का भाव |
| धूमिल | अस्पष्ट |
| चौकड़ी भरना | तेज़ दौड़ना |
| कर्म-संकुलता | बहुत सारे कार्यों का एक साथ जमा हो जाना |
| छलाँग लगाना | उछलकर कूदना |
| रगड़ना | to rub |
| एकटक | अपलक |
| भारी-भरकम | वज़नदार |
| ताम्रवर्णी | तांबे की रंग वाली |
| नैमित्तिक | किसी उद्देश्य के लिए किया गया |
| प्रत्यावर्तन | वापसी |
| ग्रीष्मावकाश | गर्मी की छुट्टियाँ |
| भावुकता | संवेदनशीलता |

'सिनेमा एक शक्तिशाली माध्यम है -

यह मनोरंजन ही नहीं मनुष्य की संवेदनाओं को भी जगाता है।'

सत्यजित रॉय

'बेबी को बेस पसंद है.........' शुरू होने वाला गाना आपने सुना ज़रूर होगा। यह 2016 में प्रदर्शित बेहतरीन हिंदी फिल्म 'सुलतान' का है। चलो फ़िल्म देखें।

फ़िल्मी समीक्षा

# सुलतान

( फ़िल्म देखते वक्त इन मुद्दों पर बारीकी से ध्यान दें )

- पात्रों का अभिनय
- संवाद
- दृश्य
- कथानक

| | | |
|---|---|---|
| फ़िल्म | : | सुलतान |
| निर्माता | : | आदित्य चोपड़ा |
| निर्देशक | : | अली अब्बास ज़फ़र |
| गीतकार | : | इर्षाद कामिल |
| संगीतकार | : | विशाल शेखर |
| पार्श्व गायक | : | राहत फ़तेह अली खान<br>सुखविंदर सिंह |
| मुख्य कलाकार | : | सलमान खान (सुलतान)<br>अनुष्का शर्मा (आरफ़ा)<br>अमित साध (आकाश ओबराय) |

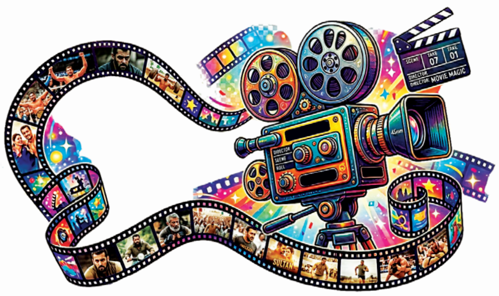

यशराज फ़िल्म प्रोडक्शन हाऊस के बैनर में निर्मित है यह फ़िल्म। इसका निर्देशन अली अब्बास ज़फ़र ने किया है। यह कहानी हरियाणा के एक साधारण युवक सुलतान अली खान की है जो अपनी कमज़ोरियों, गलतियों और जीवन की चुनौतियों से लड़ते हुए एक विश्व-स्तरीय पहलवान बनने की यात्रा तय करता है। शुरू में सुलतान एक बेपरवाह और लक्ष्यहीन व्यक्ति के रूप में चित्रित है, लेकिन आरफ़ा से प्रेम होने के बाद उसकी सोच और जीवन दोनों में बदलाव आ जाता है। आरफ़ा स्वयं एक राष्ट्रीय स्तर की पहलवान है और सुलतान के भीतर अनुशासन, मेहनत और आत्मसम्मान के बीज बोने का काम करती है। इसी प्रेरणा से सुलतान कुश्ती में उतरता है और कड़ी मेहनत के बल पर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान स्थापित करता है।

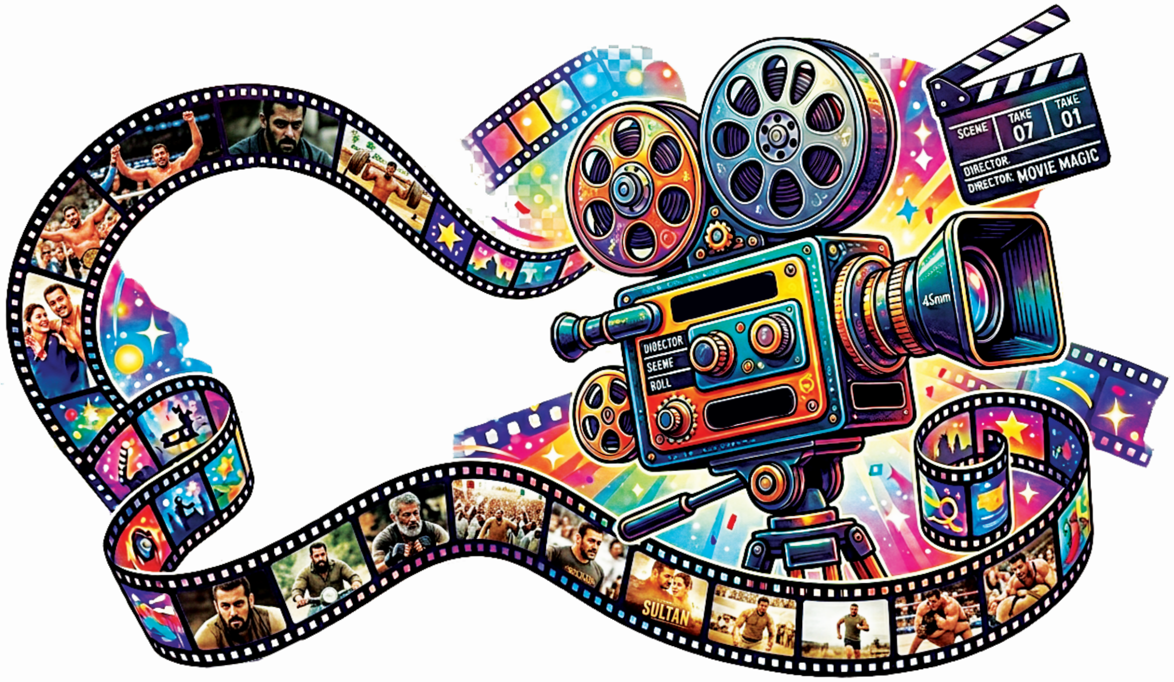


फ़िल्म केवल सुलतान की जीतों और पदकों तक सीमित नहीं है, यह उसके पतन और आत्म-संघर्ष को भी ईमानदारी से दिखाती है। एक समय ऐसा आता है जब घमंड, गलत फ़ैसले और व्यक्तिगत क्षति उसे तोड़ देते हैं। लेकिन जीवन में दूसरी बार उठने का साहस ही असली नायकत्व होता है और सुलतान अपने दर्द और पछतावे को ताकत में बदलते हुए एक बार फिर मैदान में उतरता है। फ़िल्म का यह हिस्सा दर्शकों को यह संदेश देता है कि असली जीत मैडल की नहीं, बल्कि खुद को हर बार बेहतर बनाने की होती है।

सलमान खान ने सुलतान के किरदार में भावनात्मक गहराई और शारीरिक मेहनत दोनों को प्रभावी ढंग से प्रदर्शित किया है। अनुष्का शर्मा का अभिनय भी सशक्त और विश्वसनीय है। इर्षाद कामिल इस फ़िल्म के गीतकार हैं। विशाल शेखर का संगीत फ़िल्म की भावना को और प्रबल बनाता है, विशेषकर "जग घूमेया थारे जैसा न कोई....." जैसे गीत कहानी में संवेदना और सौम्यता जोड़ते हैं। राहत फ़तेह अली ख़ान, मीका सिंह, सुखविंदर सिंह, विशाल ददलानी, इशिता, बादशाह आदि गायकों के गानों ने इस फ़िल्म को और भी लोकप्रिय बना दिया। कुश्ती और मिक्स्ड मार्शल आर्ट्स के दृश्य तकनीकी रूप से बेहतरीन और प्रामाणिक लगते हैं। ग्रामीण हरियाणा की जीवन-शैली, भाषा और वातावरण को सिनेमटोग्राफ़ी के माध्यम से जीवंत रूप दिया गया है। फ़िल्म में विदेशी लॉकेशन भी हैं।

फ़िल्म में सलमान खान का जादू आदि से अंत तक बरकरार है। 'सुलतान' ने भारतीय कुश्ती को फिर से लोकप्रिय बना दिया है। सिर्फ़ पुरुषों की कुश्ती की नहीं, बल्कि महिला कुश्ती की भी छवियाँ पूरे फ़िल्म में दर्शाई गई हैं। 'सुलतान' महिला कुश्ती के लिए भी एक शुभ संकेत है। इस दृष्टिकोण से यह महिला पहलवानों की भी फ़िल्म है। यानी इसमें एक जेंडर डिस्कोर्स भी है। खेल का उद्देश्य ही समावेशन है।

## अनुगामी कार्य

### गुज़रें - समझें : -

1. **फ़िल्म के आधार पर लिखें।**

   **1. आकर्षक दृश्य**

   **2. पसंदीदा अभिनेता**

   **3. हृदयस्पर्शी संवाद**

   **4. हास्य भरे दृश्य**

   **5. मनोरंजक दृश्य**

2. **फ़िल्म के निम्नांकित अंगों के लिए गुणवत्ता के अनुसार तार चिह्न ( ☆ ) दें।**

   (अधिकांश पाँच ☆☆☆☆☆ दें।)

- **कथा**
- **गीत-संगीत**
- **अभिनय**
- **संवाद**
- **साज-सज्जा**
- **पटकथा**
- **संपादन**
- **निर्देशन**

## परखें - पहचानें : -

I. किसी मनपसंद फ़िल्म की समीक्षा लिखें।

2. सुलतान फ़िल्म ने 3 दिनों में ही 100 करोड़ का आँकड़ा पार कर लिया है। सुलतान फ़िल्म की इस विशेष ख्याति पर एक पोस्टर तैयार करें।

## खोजें - अपनाएँ : -

मनपसंद गीत की कॉरियोग्राफ़ी करें।

### मदद लें

| | |
|---|---|
| तय करना | निश्चय करना |
| बेपरवाह | ध्यान दिए बिना |
| क्षति | नुकसान |
| बेहतर | सबसे अच्छा |
| किरदार | भूमिका |
| बरकरार | स्थिर |
| छवि | सौंदर्य |

" माँ बुनती है
संबंधों का स्वेटर
नेह-धागे से "
हरेराम 'समीप'

कविता

# चुनौती

उषा यादव

मैंने खीर बनाई चाव से
तुम बोले निर्लिप्त भाव से
क्यों इतनी मेहनत की
होटल में सब कुछ मिलता है।

मैंने स्वेटर बुना चाव से
तुम बोले अनमने भाव से
क्यों खटीं रात-दिन
एक-एक फंदा बिन
मॉल में सब कुछ मिलता है।

मैं मासूम भला क्या जानूँ
क्या-क्या मिलता है दूकान में, बाज़ार में, मॉल में
पल भर को पलकें झपकाई
फिर चुनौती दी तनिक मुस्कुराकर

"होटल में सबकुछ मिलता है"..... यहाँ कवयित्री का इशारा किसकी ओर है ?

अच्छा, अगर नेह बहन का
ममता माँ की
दुलार बेटी का
और एकनिष्ठ लगाव पत्नी का
खरीदकर लाओ
खर्च करके पैसे
तो मानूँ
तुम्हारे बाज़ार में सब कुछ मिलता है।

'चुनौती दी तनिक मुस्कुराकर' - यहाँ चुनौती क्या थी ?

# अनुगामी कार्य

## गुज़रें - समझें : -

1. प्यार से संबंधित शब्द कविता से ढूँढ़कर लिखें।

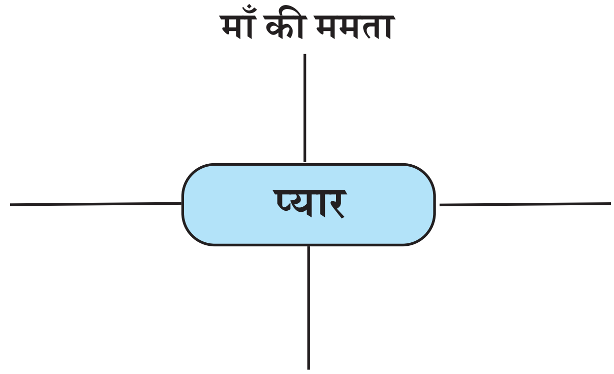


## परखें - पहचानें : -

1. कविता के आधार पर मॉल के संबंध में निम्नलिखित वाक्यांशों से सही और गलत चुनकर तालिका भरें।

❖ आवश्यक वस्तुएँ उपलब्ध हैं।

❖ सबकुछ मिलता है।

❖ ममता और दुलार मिलते हैं।

❖ आकर्षक व मनोरंजक हैं।

❖ एक जैसी ही चीज़ें मिलती हैं।

❖ लगाव और प्यार मिलते हैं।

| सही | गलत |
| --- | --- |
| | |
| | |
| | |
| | |

**2.** कविता की आस्वादन टिप्पणी लिखें।

## खोजें - अपनाएँ : -

'बाज़ारीकरण ने मानवीय संबंधों में दरारें पैदा की हैं।'

इस पर संवाद चलाएँ।

# उषा यादव

| | | |
|---|---|---|
| जन्म | : | 1948, आगरा, उत्तरप्रदेश |
| प्रमुख रचनाएँ | : | उपन्यास : पारस पत्थर, हीरे का मोल, परी का पायल<br>कहानी संग्रह : टुकड़े-टुकड़े सुख, सपनों का इंद्रधनुष, वह एक पल<br>कविता संग्रह : गुड़ियों का संसार, काले मेघा पानी दें, खेल-खिलौने का संसार |
| विशेषताएँ | : | समकालीन कविता के प्रमुख हस्ताक्षर |
| पुरस्कार | : | पद्मश्री |

## मदद लें

| | |
|---|---|
| चाव | रुचि |
| निर्लिप्त | असंतृप्त |
| बुनना | सिलाई करना |
| खटाना | नष्ट करना |
| फंदा | धागों का घेरा |
| मासूम | भोली-भाली |
| पलकें झपकाना | आँखों को झट से खोलना और बंद करना |
| चुनौती | ललकार |
| तनिक | ज़रा |
| नेह | स्नेह |
| दुलार | वात्सल्य |

'कहानी एक ऐसी रचना है, जिसमें जीवन के किसी एक अंग या मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य होता है।'

प्रेमचंद

कहानी

# फुलवा

नासिरा शर्मा

फुलवा का पेट जो पहले तीन बार भरता था, खर्च बढ़ने के बाद अब दो बार भरने लगा था। उसने कभी नहीं सोचा था कि वह कभी एक वक़्त भी खाना खाकर गुज़ारा कर सकती है। लेकिन फुलवा के सोचने से क्या होता है, समय ने उसकी खुराक तय करनी थी, सो हालात वैसे बन जाते थे।

पति के मरने के बाद फुलवा जब ससुराल के अत्याचार न सह सकी तो मायके भाग गई। वहाँ साल-भर भी नहीं गुज़रा था कि भाभी ने सास के मरते ही तेवर बदल लिए और बार-बार यह जुमला दोहराने लगी कि लड़की का मायका तब तक रहता है जब तक उसकी माँ ज़िंदा रहती है। मगर ब्याहता भाई के घर आकर रहना वैसा ही जैसे बहन के घर जाकर कोई भाई रहने लग जाए। जवान फुलवा के लिए यह जुमले वही जलन पैदा करते थे।

**" वह पहले भी कौन-सी उसकी परवाह करता था जो अब उसकी बात सुन पत्नी को समझाएगा ?" फुलवा ऐसा क्यों सोचती होगी ?**

जब बचपन में मिट्टी के चूल्हे पर पहली बार रोटी सेंकते हुए गलती से उसकी उँगलियाँ गर्म तवे पर पड़ गई थीं। छाले उभर आए थे। माँ ने नारियल का तेल लगा फूँककर उसके दर्द की सोज़िश को कम किया था मगर वह काम भाई नहीं कर सकता था। उससे कहना बेकार था। वह पहले भी कौन-सी उसकी परवाह करता था जो अब उसकी बात सुन पत्नी को समझाएगा ?

**"यह भी जानती थी कि माँ और शौहर के बहुत से ऐसे जानने वाले थे जिनके घर वह जाकर सहायता माँग सकती थी। मगर रह नहीं सकती थी।" ऐसा क्यों ?**

फुलवा के लिए घर की चौखट या कहो गाँव के बाहर की दुनिया अजनबी थी। मायके से ससुराल का रास्ता उसे पता था। दोनों ही जगहों को वह अच्छी तरह जानती थी। यह भी जानती थी कि माँ और शौहर के बहुत से ऐसे जानने वाले थे जिनके घर वह जाकर सहायता माँग सकती थी मगर रह नहीं सकती थी। गाँव की बात थी, दूसरों के मामलों में टाँग अड़ाना कोई नहीं चाहता, आखिर सबको एक साथ मेल-जोल से रहना है। किसी घर निकाले को सहारा देने से मन में खटास आ जाती है। इसी उधेड़बुन में कि वह कहाँ जाए कैसे घर से निकले? उसे रात को नींद नहीं आती थी। जब सोचते-सोचते थक जाती तो बेबस होकर रोने लगती। उसके इस दुख का कोई साथी न था जो भाभी और उसके बीच की बढ़ती दूरी को रफ़ू कर उसका मायके में रहना बहाल कर दे। रोने से जी हल्का हो जाता और उसे नींद आ जाती थी। सुबह देर तक उसे सोता देख भाभी को मौक़ा मिल जाता भाई के कान भरने का जिसका पता फुलवा को नहीं था।

भाई बहरा-अंधा नहीं था। सब कुछ देखता-सुनता था मगर चुप रहने में ही अपनी भलाई और घर की सुख-शांति देखता था। वह जानता है बहन सारे दिन अपने ही घर में कोल्हू के बैल की तरह जुटी रहती है। किसी काम से घर अचानक लौटने पर वह सब देख लेता था। यह भी देखता था कि बहन भाई से कभी कुछ नहीं कहती थी, न शिकायत, न ही चुगली। वह सिर्फ़ हँसती और कुछ न कुछ गुनगुनाती हुई काम में लगी रहती थी। गुनगुनाने की आदत उसे बचपन से थी। उसका गला बहुत मीठा था। अक्सर माँ के साथ किसी त्योहार या शादी-ब्याह में जाती तो उससे गाने की फ़रमाइश ज़रूर होती और वह फ़ौरन मान जाती थी। उसको आस-पास के लोग प्यार से कभी-कभी कोयलिया पुकारते थे।

**'भाई बहरा-अंधा नहीं था। सब कुछ देखता-सुनता था।' - यहाँ भाई का कौन-सा मनोभाव प्रकट होता है ?**

समय बड़ी ख़ामोशी से गुज़र रहा था। उसमें साँस लेनेवाले ज़रा भी ताड़ नहीं पाए कि आनेवाला समय उन्हें किस महामारी की तरफ़ ले जा रहा है इसलिए उन्होंने जाड़े, बरसात की तरह उसकी कोई तैयारी नहीं की थी। जो कुछ जोड़ते वह मौक़ा आने पर दिल खोलकर खर्च भी कर बैठते थे। कोविड महामारी आने से कुछ दिन पहले से भाभी ने उसे सिर्फ़ दो समय खाना खाने की बात की तो वह धक् से रह गई। नाश्ता करेगी तो दोपहर या रात का खाना नहीं खाएगी। तब उसने मुँह खोलकर इतना भर कहा था- "ठीक है भाभी ! क्या सुबह मैं चाय पी सकती हूँ ?"

भाभी ने यह सोचकर 'हाँ' कर दी कि चाय पीने से बदन में फुर्ती आ जाएगी और वह चुस्ती से दोपहर के खाने तक काम घसीट सकती है ! उसकी ख़ामोशी और हर बात में 'हाँ' कहने की इस आदत ने भाभी के हौसले बढ़ा दिए थे। उनमें भी बदलाव तब से आया था जब से गाँव में फ़ैशन भरी दो-तीन ऐसी दुकानें औरतों की सजावट और कपड़ों की, खुल गई थीं जिनमें जाकर औरतें हसरतों से भर जाती थीं। वही हाल भाभी का होता जिससे घर में अक्सर सास बहू में मनमुटाव-सा हो जाता था। भाभी को उनके मरने के बाद अपनी इच्छाओं को पूरा करने की आज़ादी मिल गई थी, जो अचानक फुलवा के आने से उसपर रोक लग गई थी। खर्च बढ़ा था। पति की तनख्वाह नहीं बढ़ी थी। सजने और सँवरने की शौक ने भाभी के अंदर की कोमल भावनाओं को कुचलकर रख दिया था जिसे अपराध की शुरुआत या अत्याचार का आरंभ कह सकते हैं।

**यहाँ भाभी के चरित्र की कौन-कौन सी विशेषताएँ प्रकट होती हैं ?**

फुलवा को भय लगने लगा था कि अब बारी शायद उसकी रोटी-अचार खाने की आनेवाली है। उन्हीं मुश्किल दिनों में उसकी एक ब्याहता सखी मालती मायके आई। दोनों सहेलियों में जाने क्या बातचीत हुई कि सहेली के संग कुछ दिन शहर जाने की बात उठी तो भाभी ने खुशी से और भाई ने उसमें कोई बुराई न देखकर अपनी मंज़ूरी दे दी। जाते हुए भाभी ने

फुलवा का वह सारा कपड़ा-लत्ता जो वह ससुराल छोड़ते हुए लाई थी एक गठरी में बाँध दिया जिसे देखकर फुलवा और भाई चौंक गए ! "मैंने तो इसलिए बाँध दिया सारा कपड़ा, कि कहीं फुलवा का मन वहाँ लग गया तो कपड़ा खरीदना न पड़े।"

**भाभी ने फुलवा के सारे कपड़े गठरी में बाँध दिया। - इसके पीछे का उद्देश्य क्या रहा होगा ?**

**'मायके से उसकी दूसरी विदाई है' फुलवा को ऐसा क्यों लगा ?**

भाई सर हिलाकर रह गया लेकिन फुलवा की आँखें भर आईं। उसे जाने क्यों लगा जैसे मायके से उसकी दूसरी विदाई है। उसकी सहेली को भी अजीब लगा, मगर वह कुछ बोली नहीं। वह कुछ अलग तरह से सोचे बैठी थी। उसको सारा दुखड़ा तो फुलवा सुना चुकी थी। दोनों सखियाँ बस में सवार हुईं तो पहली बार फुलवा भाई से लिपट रो पड़ी। भरी आँखों से उसने भाभी को देखा और हाथ जोड़ नमस्ते कर वह बिना कुछ बोले बस में अंदर जा अपनी सीट पर बैठ गई थी। उसे पेड़, तालाब, कच्चे-पक्के घर, खेत के छूटने का ग़म था। उसने मन में ठान लिया था कि वह हालात के समंदर में अब तन्हा तैरेगी भले ही लहरें उसे जितना भी पछाड़ें। इस तरह फुलवा मुंबई जैसे शहर में अपनी दोस्त मालती के साथ पहुँच गई।

मालती का पति स्वभाव का अच्छा था। तंगी तो उनके घर पर भी थी। अरसे से आधी तनख्वाह पर घर बैठा था। फुलवा के पास जाँगर तो था। दोनों को खुश करने के लिए उसने सखी का घर चमका दिया था ताकि उन्हें उसकी दो रोटी भारी न पड़े। उनके साथ घूमने-फिरने जाती तो भैया-भाभी याद आते। रात को बचपन का छूटा प्यार याद आता

तो आँखें भर आतीं, मगर जब भाभी के ताने याद आते और भाई की ख़ामोशी तो वह तिलमिला जाती थी। उसे जो प्यार और आदर यहाँ मिल रहा था उसने सोई चेतना को जैसे जगा दिया था। पहली बार उसे अपने अपमान का अहसास जागा और अपने धैर्य से घृणा का अनुभव हुआ। मालती के पति जिन्हें अब वह जीजाजी की जगह भैया कहने लगी थी। वह कई बार संकेत में उससे दोबारा शादी की बात कहते थे कि जीवनसाथी का होना बहुत ज़रूरी है। पहले तो वह कुछ बोलती न थी मगर एक दिन उसने हिम्मत कर धीमी आवाज़ में कहा, " भैया ! जीवन में कड़वाहट का अनुभव कभी-कभी सारी मिठास सोख लेता है। मैंने तो मायके और ससुराल दोनों का सच जान लिया है।"

**"मैंने तो मायके और ससुराल दोनों का सच जान लिया है।" फुलवा ऐसा क्यों सोचती होगी ?**

इसके बाद किसीने उससे कुछ न कहा यह सोचकर कि अभी घाव हरा है, धीमे-धीमे करके जब भर जाएगा तब खुद ही उसमें गृहस्थ जीवन जीने की ललक आएगी। मगर हो उलटा रहा था। फुलवा जहाँ से आई थी वहाँ शादी-ब्याह, बच्चे-परिवार का ही महत्व था मगर यहाँ तो औरतें चाहे अमीर हों या गरीब सब काम करती हैं, पढ़ती हैं और स्वतंत्रता से अपना जीवन चलाती हैं।

लॉकडाउन खुल चुका था। धीरे-धीरे जिंदगी अपने रूटीन पर लौटने लगी थी। भैया व सखी मालती भी अपने काम पर जाने लगे थे। अकेले घर में उसे सोचने का समय-ही-समय था। कोविड-19 में उसके सास-ससुर चल बसे और उसकी अपनी भाभी की हालत बहुत खराब है।

उसका दिल चाहा कि एक बार घर हो आए मगर सच पूछो तो घर की कोई उमंग न जागी। अच्छा यही है कि उनसे फ़ोन पर बात करना। वरना भाभी की सेवा के बहाने वह फिर उसे बँधुवा बना लेंगे। खुली आँखों से ठोकर लगने की मूर्खता अब वह नहीं करेगी। उसका मानसिक संताप कम हुआ तो उसके चेहरे पर विश्वास की चमक भी उभरी। भूख भी उसे लगने लगी थी। हँसने-बोलने में उसका मन भी रमने लगा था। उसने कई बार मालती से कहा कि वह काम करना चाहती है, अकेले घर में उसका दिल घबराता है तो सखी ने कहा कि तू हमारे ऊपर बोझ नहीं है चैन से कुछ दिन और आराम कर ले फिर कुछ और सोचना। अभी तो कोई काम पर रख भी नहीं रहा है सबके हाल पतले हैं, भगवान ने एक साथ सब पर विपदा डाली है। कुछ महीने यूँ ही गुज़र गए। दीवाली और होली भी गुज़र गईं।

कुछ समय बाद मालती के पति ने उसकी नौकरी वहीं लगवा दी जहाँ पर वह ड्राइवरी करता था। फुलवा का स्वभाव देख उन साहब व मेमसाहब ने उसे अपने फ़्लैट में रहने की इजाज़त दे दी और फुलवा को लगा जैसे उसके पंख किसी ने खोल दिए हों। वह अब बिना किसी की मदद के उड़ सकती है। अपने पैरों से चल सकती है। अपनी पसंद के पेड़ पर कूक सकती है।

# अनुगामी कार्य

## गुज़रें - समझें : -

1. **कहानी से शब्द युग्म ढूँढ़ें।**

   जैसे; मेल-जोल, बहरा-अंधा, शादी-ब्याह

2. **घटनाओं को क्रमबद्ध करें।**

   - फुलवा को नौकरी मिलना।
   - भाभी और फुलवा के बीच की दूरी बढ़ जाना।
   - मौका मिलने पर भाभी द्वारा भाई का कान भरना।
   - भाई का चुप रहना।
   - फुलवा की माँ की मृत्यु होना।
   - मालती के साथ फुलवा का मुंबई जाना।
   - फुलवा का मायके भाग आना।

3. **सही मिलान करें।**

| | |
|---|---|
| कोल्हू का बैल | चुगली करना |
| कान भरना | क्रुद्ध होना |
| ठान लेना | लगातार काम में फँसा व्यक्ति |
| तिलमिला जाना | दृढ़ निश्चय कर लेना |

4. निम्नलिखित चरित्रगत विशेषताएँ किन-किन पात्रों से संबंधित हैं ? तालिका भरें।

- ➪ गुनगुनाने की आदत।
- ➪ फ़ैशन की ओर लगाव।
- ➪ भाई के कान भरने का काम।
- ➪ हमेशा चुप रहता है।
- ➪ कोल्हू के बैल की तरह काम करना।

| फुलवा | भाई | भाभी |
|---|---|---|
| | | |

## परखें - पहचानें : -

1. फुलवा की चरित्रगत विशेषताओं पर टिप्पणी लिखें।
2. 'भाभी ने फुलवा का वह सारा कपड़ा-लत्ता जो वह ससुराल छोड़ते हुए लाई थी, एक गठरी में बाँध दिया।' फुलवा का मायके से चले जाने के बाद भाभी डायरी लिखती है। वह डायरी लिखें।

3. 'भरी आँखों से उसने भाभी को देखा और हाथ जोड़ नमस्ते कर वह बिना कुछ बोले बस में अंदर जा अपनी सीट पर बैठ गई'- इस प्रसंग को लेकर उस दिन शाम को भाभी और भैया के बीच बातचीत होती है। वह बातचीत लिखें।

4. मालती के पति की मदद से फुलवा को नौकरी मिल गई। इस खुशखबरी की सूचना देते हुए फुलवा अपने भाई के नाम एक पत्र लिखती है। वह पत्र लिखें।

5. नीचे दिए वाक्यों से क्रिया पद चुनकर तालिका भरें।

जैसे – सुबह देर तक सोती है।

क्रिया पद- सोती है

| वाक्य | क्रिया पद |
|---|---|
| फुलवा मायके आती है। | |
| फुलवा दिन-रात काम करती है। | |
| भाभी हर वक्त जली-कटी सुनाती है। | |
| भाई हमेशा चुप रहता है। | |
| मालती फुलवा को मुबंई ले जाती है। | |

जिस शब्द से किसी कार्य करने या होने का बोध हो, उसे क्रिया कहते हैं।

## खोजें - अपनाएँ : -

1. ' आत्मनिर्भर स्त्री ' विषय पर भाषण तैयार करें।

## नासिरा शर्मा

| | | |
|---|---|---|
| जन्म | : | 1948, इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश |
| प्रमुख रचनाएँ | : | सात नदियाँ एक समंदर, शाल्मली,<br>ठीकरे की मँगनी, पारिजात, कागज़ की नाव,<br>कुईयाँजान |
| विशेषताएँ | : | समकालीन कहानीकार, उपन्यासकार,पत्रकार |
| पुरस्कार | : | साहित्य अकादमी पुरस्कार,<br>व्यास सम्मान,<br>डा० राही मासूम रज़ा साहित्य सम्मान |

## मदद लें

| | |
|---|---|
| ख़ुराक | भोजन की एक समय की नियत मात्रा |
| मायके | विवाहित स्त्री की माँ का घर |
| जुमला दोहराना | एक ही बात को बार-बार कहना |
| सोज़िश | सूजन |
| शौहर | पति |
| टाँग अड़ाना | किसीके काम में बाधा डालना |
| खटास | खट्टा |
| उधेड़बुन | असमंजस की स्थिति |
| रफ़ू करना | कम करना |
| बहाल करना | पहले की स्थिति तक पहुँचाना |
| कान भरना | चुगली करना |
| कोल्हू का बैल | लगातार काम में फँसा व्यक्ति |
| फ़रमाइश | अनुरोध |
| ताड़ नहीं पाना | परख नहीं पाना |
| काम घसीटना | किसी काम को बहुत धीरे-धीरे करना |
| हौसले | धैर्य |
| हसरत | चाहत |
| मनमुटाव | मन में भेद पड़ना |

| | |
| --- | --- |
| ठान लेना | दृढ़ निश्चय कर लेना |
| तनख़्वाह | वेतन |
| शौक़ | दिलचस्पी |
| कपड़ा-लत्ता | सभी प्रकार के कपड़े और पहनने की वस्तु |
| विदाई | प्रस्थान |
| तन्हा | अकेला |
| पछाड़ना | परास्त करना |
| जाँगर | श्रम शक्ति |
| तिलमिला जाना | क्रुद्ध होना |
| धैर्य | सहनशीलता |
| कड़वाहट | bitter |
| सोख लेना | चूसना |
| जीने की ललक | जीने की तीव्र इच्छा |
| बँधुवा बनना | ज़बरदस्ती काम पर लगना |
| मन रमना | मन को बहलाना |
| विपदा | विपत्ति |

"हर समाज की संस्कृति को समझने के लिए उसकी जीवन पद्धति और खेलों को समझना आवश्यक है।"

डॉ. भीमराव अंबेडकर

जीवनी

# मरङ गोमके जयपाल सिंह मुंडा

अश्विनी कुमार 'पंकज'

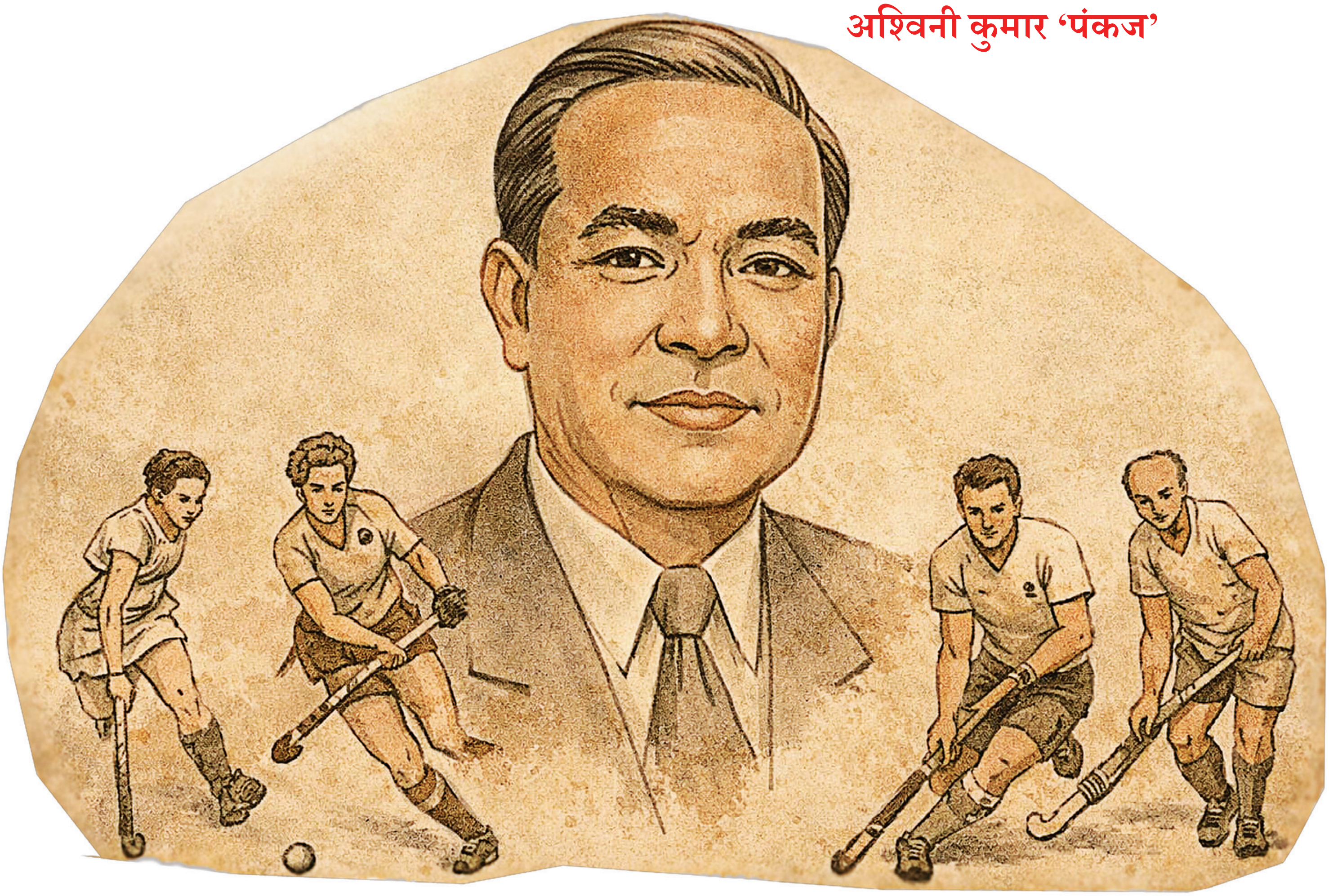

यह उस आदिवासी महानायक जयपाल सिंह मुंडा के जीवन की एक झाँकी है जिसे झारखंड के आदिवासी मरङ गोमके यानी सर्वोच्च नेता कहते हैं। वे एक जाने माने राजनीतिज्ञ थे और संविधान सभा के सदस्य थे। इनके

अलावा वे पत्रकार, लेखक, संपादक और 'ऑक्सफोर्ड ब्लू' का ख़िताब पानेवाले हॉकी के एकमात्र अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी भी थे। उन्होंने 1929 में मोहन बगान हॉकी क्लब की स्थापना की और टीम का नेतृत्व किया।

एक खिलाड़ी के रूप में जयपाल सिंह मुंडा की ख्याति कॉलेज के दिनों में ही स्थापित हो गई थी। वे इंग्लैंड की कई पेशेवर टीमों के लिए खेलते थे, जबकि उन्हें खेलों का कोई विधिवत् प्रशिक्षण नहीं मिला था। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में उन्होंने एशियाई विद्यार्थियों को लेकर हॉकी की एक टीम बनाई थी। वे हॉकी के जितने लोकप्रिय खिलाड़ी थे, उतने ही वे फुटबॉल, रग्बी, टेनिस और क्रिकेट के लिए भी जाने जाते थे।

जब कॉलेज में उन्हें खेलने का अवसर नहीं मिला तो वे सीधे लंदन के पेशेवर हॉकी क्लब के पास चले गए और वहाँ की सदस्यता ले ली। इसके बारे में वे कहते हैं, "एक दिन कॉलेज में मैंने नोटिस देखी। यह नोटिस मेरे जैसे फ्रेशर्स छात्रों के लिए थी कि वे अपनी पसंद का खेल चुन सकते हैं। खेलने के लिए उन्हें पहले ट्रायल देना है और यदि वे चयनित हो जाते हैं तो उन्हें कॉलेज की टीम में शामिल कर लिया जाएगा। किसी खेल शिक्षक ने मुझ फ्रेशर को ट्रायल के लिए भी रिकेमेंड करना ज़रूरी नहीं समझा। मैंने सभाभवन के दरबान हेनरी से राय की, क्या करना चाहिए। उसने कहा, 'आप जी.आर.एफ. टर्नर से मिलो, वही आपको टीम में शामिल करा सकता है। वह आइसिस हॉकी क्लब चलाता है।' मैंने फ्रेशरों का ट्रायल देखा और देखने के बाद टीम में शामिल होने का उत्साह छोड़ दिया। मैं टर्नर के पास गया ताकि वह मुझे हॉकी टीम में एक मौका दे और मैं अपनी योग्यता साबित कर सकूँ। वह मुस्कुराया, कल बल्लियोल मैदान में वर्सिटी ऑकेजनल्स के साथ ऑक्सफ़ोर्ड

का मैच है। खेलने आ जाना। खेल में मेरी जगह क्या होगी; इस बारे में उसने कुछ नहीं कहा, पर उसने खेल के दौरान मुझे सेंटर हॉफ़ में रखा। मैंने दो कॉर्नर शॉट्स के ज़रिए गोल किया। हाफ़ टाइम में वह मेरे पास आया और बोला, 'तुमने क्यों नहीं अपना नाम फ्रेशर्स ट्रायल के लिए दिया ?' उस मैच के बाद कॉलेज के लिए बिना खेले मुझे टीम में शामिल कर लिया गया था।

'खेल में मेरी जगह क्या होगी ; इस बारे में उसने कुछ नहीं कहा।' इस विचार के पीछे का कारण क्या रहा होगा ?

"मेरा हॉकी का भविष्य उज्ज्वल था। अब इसमें कोई संदेह नहीं रह गया था। बल्लियोल का डेनिस स्कॉट वर्सिटी का कैप्टन था। किसी कारण से उन दिनों खेल के मैदान से बाहर हो गया था। पूरे खेल सीज़न के दौरान मुझे उसकी जगह रखा गया। लेकिन सिर्फ़ वर्सिटी के मैचों के लिए। पर वह लौट आया और मैं ब्लू हॉकी से वंचित रह गया।"

1928 का स्वर्ण पदक सिर्फ़ भारत ही नहीं, बल्कि ओलिंपिक में किसी भी एशियाई देश को मिलनेवाला पहला स्वर्ण पदक था। भारत के लोग जिस ध्यानचंद पर फ़िदा हैं और जिसे हॉकी का जादूगर कहा जाता है, वह शख्स अपने उस कैप्टन पर आजीवन फ़िदा रहा जो एक आदिवासी था। ध्यानचंद भारतीय हॉकी टीम के पहले कैप्टन जयपाल सिंह मुंडा को आजीवन नहीं भूल पाए। जयपाल सिंह ने ओलिंपिक के फ़ाइनल मैच के पहले अपनी कप्तानी छोड़ी थी। इसके बारे में अपनी ऑटोबायोग्राफ़ी 'गोल' में ही ध्यानचंद लिखते हैं, " ओलिंपिक के लिए

ध्यानचंद कैप्टन जयपाल सिंह मुंडा को आजीवन क्यों नहीं भूल पाए ?

भारत से 13 और इंग्लैंड में रह रहे तीन या चार भारतीयों को टीम के लिए चुना गया था। इंग्लैंड से चुने खिलाड़ियों में से एक जयपाल सिंह थे। उन दिनों जयपाल सिंह इंग्लैंड की हॉकी में एक बहुत बड़ा नाम था। वे ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी टीम के प्रमुख स्तंभ थे और समूचे ब्रिटेन में उनकी बहुत प्रतिष्ठा थी। वे हर दृष्टि से योग्य थे और भारतीय हॉकी टीम के कप्तान के रूप में उनका चयन सर्वथा स्वाभाविक और नैसर्गिक था। जयपाल सिंह को अंग्रेज़ी खिलाड़ियों, वहाँ के वातावरण और यूरोप के खेल मैदानों की बहुत गहरी समझ थी। इससे भारतीय टीम को बहुत बड़ी मदद मिली। इंग्लैंड की हॉकी की दुनिया में और वहाँ के सोशल सर्कल में वे किस कद्र और असाधारण रूप से लोकप्रिय थे, इसे मैंने बहुत नज़दीक से देखा है। यह हमारे लिए बहुत गौरव की बात है कि हमें उनके जैसा कप्तान मिला था।

**'यह हमारे लिए गौरव की बात है कि हमें उनके जैसा कप्तान मिला था।'-- ध्यानचंद ने ऐसा क्यों कहा होगा ?**

जयपाल सिंह टीम के साथ नहीं रहते थे। चूँकि वे ऑक्सफ़ोर्ड में पढ़ रहे थे, इसलिए हमेशा ऑक्सफ़ोर्ड से लंदन आना-जाना किया करते थे। वे लगभग हवा की तरह उड़ते हुए आते और मैच खत्म होते ही तुरंत वापस लौट जाते। यह मेरे लिए एक रहस्य ही बना रहा कि इंग्लैंड में हमारी कप्तानी करनेवाले और ओलिंपिक के दो-तीन मैचों में हमारा नेतृत्व करनेवाले जयपाल सिंह हमें अचानक क्यूँ छोड़ गए। इस बारे में मैंने उड़ती-उड़ती कई कहानियाँ सुनीं, लेकिन वास्तव में सच्चाई क्या थी, इसे कभी नहीं जान पाया।"

खैर, कारण जो भी रहे हों, वास्तविकता यही थी कि जयपाल सिंह जो ऑक्सफ़ोर्ड की टीम की रीढ़ और स्टार थे, जिन्होंने हॉकी की दुनिया में ग्रेट ब्रिटेन व पूरे उपमहाद्वीप में ज़बरदस्त लोकप्रियता एवं अभूतपूर्व प्रतिष्ठा हासिल की थी, वे हमारा साथ आखिरी तक नहीं दे पाए। पंजाब के एरिक पिन्निगेर, जो टीम के उप-कप्तान थे, ने ही सेमी फ़ाइनल और फ़ाइनल में जयपाल सिंह की विरासत को सँभाला था।

सचमुच जयपाल सिंह के नेतृत्व में हॉकी टीम ने पूरे यूरोप में जल्दी ही अपनी लोकप्रियता बना ली थी। 1928 के ओलिंपिक के फ़ाइनल में जब भारतीय हॉकी टीम ने हॉलैंड को 3 गोल से हरा दिया तो 'द स्टेट्समैन' अखबार ने इस जीत की खबर को प्रमुखता और विस्तार से छापा। लेकिन इस खबर में कहीं भी जयपाल सिंह का ज़िक्र नहीं था।

**'अखबार के समाचार में जयपाल सिंह मुंडा का जिक्र नहीं था।'-- इसके बारे में आपका विचार क्या है ?**

आखिर जयपाल सिंह ने क्यों कप्तानी छोड़ी थी ? टीम के मैनेजर ए. बी. रोजर और जयपाल सिंह मुंडा के बीच ऐसी क्या बात हुई थी, जिसके कारण विवाद हुआ और सबका चहेता आदिवासी कप्तान चुपचाप टीम छोड़कर चला गया। इस बारे में कोई विस्तृत विवरण आज तक सामने नहीं आ सका है। हालाँकि स्वयं जयपाल सिंह मुंडा ने इसके बारे में कहीं भी कोई बात नहीं की है। कप्तानी छोड़ने का प्रसंग जब भी आया है, बहुत ही दर्द के साथ उन्होंने लिखा है- "मैंने हमेशा ठोकर खाई है।"

**"मैंने हमेशा ठोकर खाई है।" --जयपाल सिंह मुंडा ने ऐसा क्यों सोचा होगा ?**

1928 की ओलिंपिक के बाद जयपाल सिंह मुंडा ने फिर कभी हॉकी नहीं खेलने का निर्णय लिया था। लेकिन यह निर्णय क्यों लिया, उसपर एक शब्द भी नहीं कहा। 1928 की ओलिंपिक के 40 साल बाद भी 1969 में संस्मरण लिखते हुए उन्होंने वह राज़ नहीं खोला, जिसे ध्यानचंद और पूरी दुनिया जानना चाहती थी। तब क्या यह मान लिया जाए कि जयपाल सिंह मुंडा सच कहने से डरते थे ? ज़ाहिर है कि ऐसी कोई बात नहीं थी जो व्यक्ति खेल के लिए आई.सी.एस. की नौकरी को ठुकरा सकता है, दिल की सुनता है, वह निश्चय ही डरपोक नहीं था। असल में इसके पीछे उनका वह आदिवासीपन था, जो इस विवाद को तूल नहीं देना चाहता था। दूसरा, वे जानते थे कि नस्लीय भेदभाव इस तरह के विवाद से नहीं खत्म होनेवाला है। जैसा कि उन्होंने संविधान निर्मात्री सभा की बैठक में बोलते हुए कहा था, "हम बस यही चाहते हैं कि जो नागरिक बरताव सबके साथ हो, वही हमारे साथ भी हो। आदिवासियों को भी बराबर का नागरिक समझा जाए। जानता हूँ कि अल्पसंख्यकों, आदिवासियों की समस्याओं का समाधान आनेवाले दिनों में ही संभव है।"

## अनुगामी कार्य

### गुज़रें - समझें : -

1. **जीवनी में से विदेशी शब्द ढूँढ़ें और उन्हें अंग्रेज़ी में लिखें।**

   जैसे : ऑक्सफोर्ड ब्लू – OXFORD BLUE

2. **पाठ के आधार पर नीचे दिए वाक्यों को क्रमबद्ध करें।**

   - ऑक्सफोर्ड ब्लू का एकमात्र खिलाड़ी होना
   - मोहन बगॉन हॉकी क्लब की स्थापना करना
   - इंग्लैंड़ के कई पेशेवर टीम के लिए खेलना
   - हॉकी के लोकप्रिय खिलाड़ी बनना
   - जी.आर.एफ. टर्नर से मिलना
   - टीम में सेंटर हॉफ़ में रखना
   - ओलिंपिक के फ़ाइनल मैच के पहले कप्तानी छोड़ना

## परखें - पहचानें : -

1. ओलिंपिक खेल के दौरान कप्तानी छोड़ने के संबंध में ध्यानचंद और जयपाल सिंह मुंडा के बीच की बातचीत लिखें।

2. "कल मैदान में हॉकी मैच है। खेलने आ जाना। खेल में क्या होगा, इस बारे में उसने कुछ नहीं कहा।" जयपाल सिंह मुंडा अपना यह अनुभव डायरी में लिखते हैं। वह डायरी तैयार करें।

3. भारतीय क्रिकेट की बुलंदियों को छूने वाली केरल की अपनी मिन्नूमणि से साक्षात्कार लेने के लिए प्रश्नावली बनाएँ।

4. नीचे दिए गए वाक्यों को पढ़ें और तालिका भरें।

    ❖ उन्हें खेलों का कोई विधिवत् प्रशिक्षण नहीं मिला था।
    ❖ अपनी ऑटोबायोग्राफ़ी 'गोल' में ध्यानचंद लिखते हैं।
    ❖ यदि वे चयनित हो जाते हैं तो उन्हें कॉलेज की टीम में शामिल कर लिया जाएगा।
    ❖ अब इसमें कोई संदेह नहीं रह गया था।
    ❖ आदिवासियों को भी बराबर का नागरिक समझा जाए।
    ❖ जयपाल सिंह को झारखंड के आदिवासी मरङ गोमके यानि सर्वोच्च नेता कहते हैं।

| वर्तमान काल | भूतकाल | भविष्यत् काल |
| --- | --- | --- |
| | | |

## खोजें - अपनाएँ : -

मरङ गोमके जयपाल सिंह मुंडा से संबंधित बयोपिक (Biopic) के लिए उनकी जीवनी के एक प्रसंग को लेकर पटकथा तैयार करें।

**बयोपिक(Biopic)**

बयोपिक (Biopic) एक ऐसी फिल्म होती है जो किसी वास्तविक व्यक्ति के जीवन पर आधारित होती है। यह शब्द अंग्रेज़ी के दो शब्दों Biography और picture को मिलाकर बना है।

# अश्विनी कुमार 'पंकज'

| | | |
|---|---|---|
| जन्म | : | 1964, बिहार |
| प्रमुख रचनाएँ | : | उलगुलान, नाट्य दल, रंग बिदेसिया, पेनाल्टी कार्नर, इस सदी के असुर |
| विशेषताएँ | : | कवि , कहानीकार और संपादक |

## मदद लें

| | |
|---|---|
| झाँकी | झलक |
| ख़िताब | पुरस्कार |
| ख्याति | यश |
| शामिल करना | भाग बनाना |
| दरबान | चौकीदार |
| साबित करना | प्रमाणित करना |
| फ़िदा | मोहित |
| शख्स | व्यक्ति |
| समूचा | पूरा |
| चयन | चुनाव |
| कद्र | इज़्ज़त |
| नज़दीक | पास |

| | |
|---|---|
| हासिल करना | प्राप्त करना |
| आखिरी | अंतिम |
| विरासत | परंपरा |
| ज़िक्र | उल्लेख |
| चहेता | प्रिय |
| ठुकराना | मना करना |
| तूल देना | बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत करना |
| नस्लीय | जातीय |
| बरताव | व्यवहार |
| समाधान | हल |

# “इतिहास-खंड”

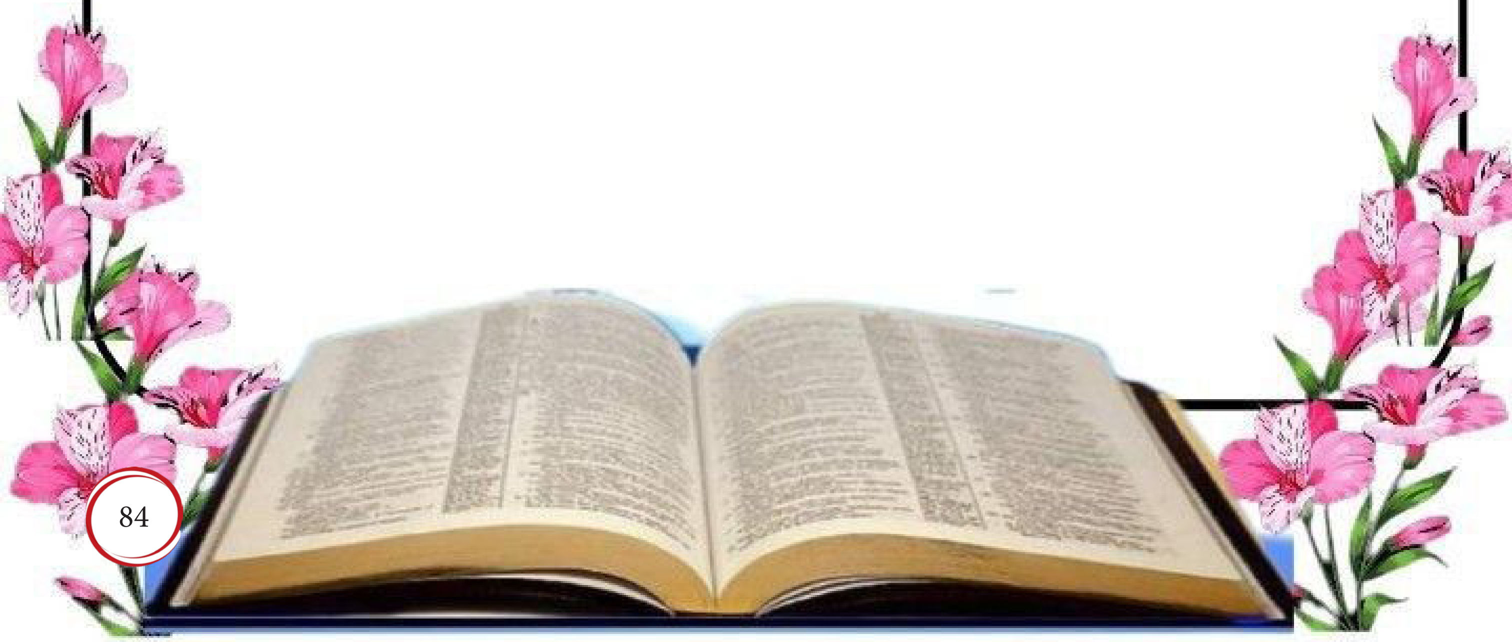

# हिंदी साहित्य का इतिहास - भूमिका

किसी भी भाषा के मौखिक या लिखित साहित्य का स्वरूप उसके आदि से लेकर गुज़रे जानेवाले भाषिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, सांप्रदायिक, सामाजिक, आर्थिक, वैज्ञानिक वगैरह परिवर्तनों के मुताबिक बदलता रहता है। भाषा और साहित्य के परिवर्तन की शृंखला की अनेक कड़ियाँ होती हैं। इन परिवर्तनों के ज़रिए साहित्य में विशेष प्रवृत्तियाँ जन्म लेती हैं, जो कमोबेश लंबी अवधि तक जारी रहती हैं। इस प्रकार की प्रवृत्तियों को आधार मानकर विभिन्न विद्वानों ने हिंदी साहित्य के इतिहास को अलग-अलग कालखंडों में विभाजित करने का प्रयास किया है। साहित्यिक प्रवृत्तियों एवं भाषागत विशेषताओं को ध्यान में रखकर लिखे गए इतिहास ग्रंथों में सबसे प्रमुख रामचंद्र शुक्ल कृत 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' माना जाता है। हिंदी साहित्य के विभिन्न चरणों के उद्भव संबंधी पहलुओं का अध्ययन करना अनिवार्य है। इसके लिए प्रत्येक चरण की भाषागत विशेषताओं पर ध्यान दिया जाना जरूरी है।

हिंदी भाषा के पूर्व रूप को पुरानी हिंदी कहते हैं जो कि अपभ्रंश से विकसित हुई है। अपभ्रंश जो है, प्राकृत भाषा का अंतिम रूप है। अपभ्रंश का मतलब है बिगड़ा हुआ या भ्रष्ट रूप। इसे अवहट्ठ भी कहते हैं। अपभ्रंश प्राकृत और आधुनिक भारतीय भाषाओं जैसे हिंदी, मराठी, गुजराती आदि के बीच की कड़ी है। अपभ्रंश के कई भेद हैं जैसे शौरसेनी, मागधी, अर्धमागधी, बुंदेलखंडी, भोजपुरी, मैथिली आदि।

## हिंदी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन

हिंदी साहित्य का इतिहास लगभग एक हज़ार वर्ष पुराना है। कई विद्वानों ने अलग-अलग मानदंडों से इसके इतिहास को परखने का प्रयास किया था। लेकिन इस सिलसिले में सबसे तर्कसंगत प्रयास आचार्य रामचंद्र शुक्ल का माना जाता है जिन्होंने 'हिंदी साहित्य का इतिहास' नाम से 1916 में पुस्तक प्रकाशित की। साहित्य के इतिहास लेखन की सबसे बड़ी चुनौती काल विभाजन की थी।

साहित्य के इतिहास को मोटे तौर पर तीन भागों में विभक्त किया गया है। -

**(क) प्राचीन काल**

**(ख) मध्यकाल**

**(ग) आधुनिक काल**

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी साहित्य के इतिहास को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया है।

**(1) आदिकाल अथवा वीरगाथाकाल (1050 ई. से 1375 ई. तक)**

**(2) भक्तिकाल या पूर्व-मध्यकाल (1375 ई. से 1700 ई. तक)**

**(3) रीतिकाल या उत्तर-मध्यकाल (1700 ई. से 1900 ई. तक)**

**(4) आधुनिक काल (1900 से अब तक)**

### अनुगामी कार्य

**गुज़रें - समझें : -**

1. हिंदी साहित्य के काल विभाजन पर चर्चा करें और आलेख तैयार करें।

# आदिकाल

वीर रस प्रधान रचनाओं की प्रमुखता के कारण रामचंद्र शुक्ल ने आदिकाल को 'वीरगाथाकाल' भी कहा है। यह काल युद्धों का काल था। इसलिए साहित्य पर भी वीरता का प्रभाव पड़ा। इस काल के चारण कवियों ने अपने आश्रयदाता राजाओं के यशोगान करने के लिए ही वीर काव्य लिखे थे। इन काव्यों में युद्धों का बड़ा सुंदर एवं जीवंत वर्णन मिलता है।

## आदिकाल के प्रमुख साहित्य

### धार्मिक सहित्य

धार्मिक साहित्य के अंतर्गत तीन प्रकार के साहित्य आते हैं, जैसे सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य और जैन साहित्य। सिद्ध साहित्य बौद्ध धर्म के सिद्धों द्वारा लिखा गया था। इसका उद्देश्य बौद्ध धर्म का प्रचार था। इसकी भाषा अपभ्रंश और पुरानी हिंदी के मिश्रण से बनी एक भाषा थी। सरहपा, लुईपा, कण्हप्पा इस साहित्य के प्रमुख रचनाकार थे।

नाथ साहित्य, गोरख नाथ और उनके अनुयायियों द्वारा रचा गया साहित्य है। इसमें योग और वैराग्य का विवरण है। जैन साहित्य में जैन कवियों द्वारा रचित धार्मिक एवं उपदेशात्मक साहित्य शामिल हैं। यह साहित्य जैन धर्म के प्रचार केलिए लिखा गया है। इस काल के एक प्रमुख कवि का नाम है 'स्वयंभू।

### रासो साहित्य

चारण कवियों द्वारा अपने आश्रयदाताओं की वीरता के वर्णन केलिए लिखा गया साहित्य है रासो साहित्य। यह मुख्य रूप से 'डिंगल' और 'पिंगल' नामक भाषाओं में रचा गया

था। इसमें प्रबंध काव्यों की भी रचना हुई। जैसे, (1) दलपति विजय कृत 'खुमान रासो' (2) चंद बरदाई कृत 'पृथ्वीराज रासो' (3) नरपति नाल्ह कृत 'बीसलदेव रासो' (4) जगनिक कृत 'परमाल रासो' (आल्हा खंड।)

## वीरगाथा काव्य की विशेषताएँ

इसमें वीर रस की प्रधानता, युद्ध के दृश्यों का जीवंत एवं मार्मिक चित्रण, राजाओं की वीरता एवं पराक्रम का अतिशय वर्णन, छंद युक्त रचना शैली, पिंगल- डिंगल भाषाओं का प्रयोग आदि देखे जा सकते हैं। इन सभी गुणों से युक्त प्रसिद्ध रासो काव्य है, चंद बरदाई कृत 'पृथ्वीराज रासो'।

### 'पृथ्वीराज रासो'

इसके रचनाकार चंदबरदाई हैं। यह हिंदी साहित्य का प्रथम महाकाव्य माना जाता है। यह काव्य वीरता और श्रृंगार का गंगा-यमुना संगम माना जाता है। इसमें तत्कालीन महाराजा पृथ्वीराज चौहान को नायक बनाकर उनकी वीरताओं, पराक्रमों और महिमाओं का सुंदर चित्रण किया गया हैं।

### अमीर खुसरो

अमीर खुसरो ने बोलचाल की भाषा को अपनाकर पहेलियों की रचना द्वारा जनता का मनोरंजन किया। उनकी भाषा में दिल्ली के आसपास की खड़ीबोली का प्रभाव दिखाई पड़ता है। शायद इसलिए इनको खड़ीबोली हिंदी का प्रथम कवि माना जाता है।

# अनुगामी कार्य

## गुज़रें - समझें : -

1. आदिकाल के प्रमुख कवियों और उनकी रचनाओं के नाम लिखें।

## परखें - पहचानें : -

1. नाथ और रासो साहित्य पर टिप्पणी लिखें।

2. 'आदिकाल की मुख्य प्रवृत्तियाँ और प्रमुख रचनाएँ' –

   इस विषय पर संगोष्ठी चलाएँ और संगोष्ठी रिपोर्ट तैयार करें।

## खोजें - अपनाएँ : -

1. आदिकाल के अन्य प्रमुख कवियों का डिज़िटल प्रोफाइल तैयार करें।

# भक्ति काल

हिन्दी साहित्य के इतिहास के मध्यकाल के दो काल खंडों में से पूर्व खंड को भक्तिकाल और उत्तर खंड को रीतिकाल नाम दिए गए हैं। भक्ति, प्रेम और सामाजिक समरसता पर आधारित साहित्य होने पर भक्तिकाल को हिंदी साहित्य का 'सुवर्ण युग' माना जाता है।

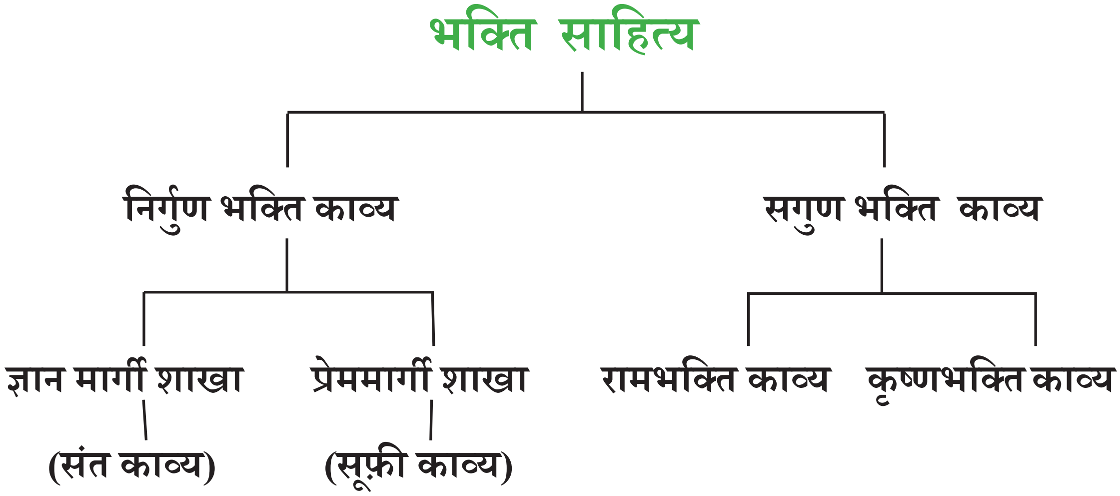


भक्ति का अर्थ है, ईश्वर या किसी बड़े के प्रति होने वाली श्रद्धा या आदर। तो भक्तिकाल कहने से ऐसे किसी विशेष कालखंड का बोध होता है जिसमें ईश्वर की प्रार्थना, स्तुति कीर्तन आदि को विशेष महत्व दिया जाता है। इस प्रकार ईश्वर-प्रार्थना और भक्ति संबंधी साहित्य बड़ी मात्रा में लिखे जाने के कारण इस काल को 'भक्ति काल' नाम दिया गया।

## भक्तिकाल की विशेष परिस्थितियाँ

भक्तिकाल तत्कालीन विशेष सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक परिस्थितियों की उपज है। इस काल में विदेशी शासन के अधीन जन विरोधी रवैयों, हरकतों से त्रस्त होकर लोग ईश्वर की श्रद्धा- भक्ति की ओर मुड़े, साथ-साथ उच्च वर्ग के कर्म कांडों और पाखंडों के विरुद्ध भक्ति को मोक्ष का मार्ग माना गया। परिणामस्वरूप हिंदु-मुस्लिम संस्कृतियों में मेल-जोल की

भावना पैदा हुई और समन्वयवाद को बढ़ावा मिलने लगा। इन दिनों दक्षिण भारत के भक्ति आंदोलन को रामानंद जैसे संतों ने उत्तर भारत में फैलाया। ऐसी अनुकूल परिस्थितियों में भक्ति कालीन साहित्य का उदय हुआ। सरल भाषा में लिखे गए भक्ति साहित्य ने आम जनता के मानस को प्रभावित किया। साहित्य में निर्गुण भक्ति और सगुण भक्ति नाम की दो धाराएँ विकसित हुईं जिनके तहत कबीर, सूर, तुलसी, जायसी, मीराबाई जैसे महान कवियों का उदय हुआ। भक्ति आंदोलन से सामाजिक एवं धार्मिक सुधारों का रास्ता खुल गया।

## निर्गुण भक्ति काव्य

भक्ति साहित्य की निर्गुण भक्ति धारा में ईश्वर के निराकार, निर्गुण रूप की उपासना की जाती है। इसमें ईश्वर को किसी रूप या नाम से नहीं बल्कि ब्रह्म के रूप में देखा जाता है। इसमें मूर्ति पूजा के स्थान पर ज्ञान और प्रेम पर बल दिया जाता है। इस घारा की दो उपशाखाएँ हैं- ज्ञान मार्गी (ज्ञानाश्रयी) और प्रेम मार्गी (प्रेमाश्रयी)।

### ज्ञान मार्गी शाखा

निर्गुण भक्ति काल की ज्ञान मार्गी शाखा को संत काव्य भी कहते हैं। इसमें ज्ञान के माध्यम से निर्गुण, निराकार ईश्वर की उपासना की जाती है। कबीरदास इस धारा के प्रसिद्ध्‌ कवि है। कबीर के अलावा इस धारा में दादु दयाल, रैदास और गुरु नानक भी शामिल हैं। इस शाखा की मान्यता है कि गुरु के माध्यम से ही ईश्वर का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। इसलिए इसमें गुरु का ईश्वर के बराबर स्थान है, तभी तो कबीर ने गाया है -

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागू पाय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय॥

इस शाखा के कवियों ने तत्कालीन समाज में व्याप्त मूर्ति पूजा, जातिवाद, छुआछूत जैसे बाहरी

पाखंडों का कड़ा विरोध किया। योग साधना पद्धतियों का भी इसमें विशेष उल्लेख किया गया है।

## ज्ञानमार्ग की प्रमुख विशेषताएँ

ज्ञान मार्गी शाखा के कवि संत कवि कहलाते हैं। संत कवियों ने निर्गुण भक्ति के ज़रिए हिंदुओं और मुसलमानों को एक दूसरे के करीब लाने की कोशिश की। इन्होंने निर्गुण भक्ति के आधार पर ही राम और रहीम की एकता का सपना देखा था और हिंदु -मुसलमानों की निरर्थक रूढ़ियों का विरोध कर दोनों में सहभाव उत्पन्न करने का प्रयास किया था। महात्मा कबीर इस धारा के प्रमुख प्रवर्तक थे।

## कबीरदास

ज्ञान मार्गी शाखा के प्रमुख एवं प्रवर्तक कवि कबीरदास को कोई औपचारिक शिक्षा-दीक्षा नहीं मिली थी। ऐसी हालत में साधु-संतों के सत्संग में आकर उनको जीवन की अच्छाइयों और बुराइयों का ज्ञान प्राप्त करने का अवसर मिला। ज्ञानमार्गी भक्ति-धारा के कवि होते हुए भी उन्होंने अपनी कविताओं के ज़रिए एक समाज सुधारक की भी भूमिका निभाई थी। वे एक क्रांतिकारी कवि थे, इसलिए उन्होंने लिखा है-

**पाहन पूजै हरि मिले, तो मैं पूजूँ पहार।**
**ताते ये चाकी भली, पीस खाय संसार॥**

( पत्थर की बनी मूर्ति की पूजा करने पर अगर ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है तो मैं पहाड़ की पूजा करने के लिए भी तैयार हूँ। चक्की भी पत्थर से बनी हुई है तो चक्की की पूजा करना बेहतर होगा। चक्की अन्न को पीसकर दुनिया का पेट भरती है। इसलिए चक्की, पत्थर की मूर्ति से कहीं बेहतर है। )

कबीर की कविताओं में रहस्यवादी तत्व भी प्राप्त होते हैं।

जैसे, **जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि है मैं नाहिं।**

**सब अंधियारा मिट गया, दीपक देखा माहिं ।।**

(अहंकार मिटने पर ही ईश्वर की अनुभूति होती है- यह अद्भुत आत्म रहस्य है।)

सधुक्कड़ी भाषा के प्रयोग से गहन दार्शनिक विचारों को आम जनमानस तक पहुँचाने में वे पूर्ण रुप से सफल निकले। कबीर की वाणी 'बीजक' नामक ग्रंथ में संकलित है। इसके साखी, सबद, रमैनी नाम से तीन भाग हैं। उनकी कविता का चमत्कार यह है कि नपे-तुले शब्दों में हृदय की सच्चाई और तीव्र अनुभूति की अभिव्यक्ति होती है।

## प्रेममार्गी शाखा

निर्गुण भक्ति साहित्य की प्रेम मार्गी शाखा के भक्त कवियों का मौलिक संबंध सूफ़ी संप्रदाय से है। ये इस्लाम धर्म के एक उदारवादी विभाग से संबंधित मुसलमान संत थे। इसलिए इसे सूफ़ी काव्य भी कहा जाता है। ये काव्य प्रबंधात्मक शैली में लिखे गए हैं। जिसमें दोहा, चौपाई, छंद का प्रयोग हुआ है। सूफ़ी काव्यों का आधारभूत तत्व प्रेम है। इसमें आध्यात्मिक प्रेम यानि ईश्वर के प्रति प्रेम को लौकिक प्रेम के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है। मतलब प्रेम ही आध्यात्मिक साधना का सार है। इस बात को सिद्ध करने केलिए काव्यों में लौकिक प्रेम की कहानी को प्रतीकात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है। जिसमें नायक आध्यात्मिक साधक है और नायिका ईश्वर का प्रतीक। प्रेम मार्गी कवियों की प्रेम गाथाएँ भारतीय सर्गबद्ध शैली पर न होकर फ़ारसी की मसनवी शैली पर लिखी गयी है। इनमें ईश्वर वंदना, पैगंबर की स्तुति और तत्कालीन

बादशाह की स्तुति के साथ काव्य का आरंभ होता है। इनकी रचनाएँ अवधि भाषा में लिखी गई हैं। ये कवि किसी संप्रदाय विशेष का खंडन-मंडन न करके कुछ समन्वयवादी दृष्टिकोण अपनाए हुए हैं। फिर भी मुस्लमान धर्म की विशेषताएँ इनमें विशेष झलकती हैं।

प्रेम मार्गी शाखा के कवियों ने मुसलमान होते हुए भी भारतीय हिंदु लोक कथाओं को अपने काव्यों के कथानकों का आधार बनाया। जैसे कि इस धारा के सबसे मशहूर कवि मलिक मुहम्मद जायसी ने अपने 'पद्मावत' महाकाव्य में रत्नसेन और पद्मावती को नायक-नायिका रूप में उपस्थित किया।

निर्गुण ज्ञानमार्गी धारा के कवियों की तरह इन कवियों ने भी सामाजिक कुरीतियों एवं मिथ्याचारों का विरोध किया। सूफ़ी काव्य की विशेषता है कि इसमें भारतीय लोक-संस्कृति और इस्लाम धर्म के तत्व शामिल हैं।

## प्रेम मार्गी शाखा के प्रमुख कवि एवं काव्य

सूफ़ी कवि ज़्यादातर मुस्लमान होते हैं, लेकिन कुछ सूफ़ी संत ऐसे भी थे जो किसी धर्म से जुड़े नहीं थे। सूफ़ी वाद इस्लाम का एक रहस्यवादी पंथ है। इसके अधिकांश कवि इस्लाम धर्म के थे जैसे कुतुबन, मंझन, मलिक मुहम्मद जायसी।

### मलिक मुहम्मद जायसी

मलिक मुहम्मद जायसी इस शाखा के प्रमुख एवं मशहूर कवि थे और इनको प्रेम मार्गी कवियों के प्रतिनिधि कवि माने गए हैं। इनकी एक मशहूर रचना है 'आखिरी कलाम' जिसमें ईश्वर स्तुति, पैगंबर मुहम्मद की तारीफ़ आदि के साथ-साथ दुनिया के खत्म होने और जन्नत का भी ज़िक्र हुआ है। जायसी की अन्य महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं 'पद्मावत' और अखरावट'।

'पद्मावत' महाकाव्य में रानी पद्मावती और राजा रत्नसेन के प्रेम और श्रद्धा का वर्णन है। अवधी भाषा में दोहा-चौपाई छंद में रचित इस महाकाव्य में कवि ने भारतीय समाज के लोकपक्ष, ग्रामीण-संस्कृति, त्योहारों आदि का मार्मिक चित्रण किया है।

## भक्तिकाल की सगुण भक्ति धारा

सगुण भक्ति से तात्पर्य है ईश्वर के साकार रूप की उपासना। जब कि निर्गुण भक्ति से मतलब है बिना किसी मूर्ति के ईश्वर की उपासना। इसकी मान्यता एवं विश्वास है कि ईश्वर धरती पर भक्तों की रक्षा केलिए अवतार रूप में जन्म लेते हैं। ऐसे अवतारों की पूजा-उपासना करना भक्तों का कर्तव्य है। इसलिए कवि ईश्वर के गुणों, अवतारों और लीलाओं का वर्णन करते हैं और इनकी मूर्ती की पूजा करते हैं। हिंदी साहित्य में सगुण भक्ति धारा को दो शाखाओं में विभक्त किया गया है - राम भक्ति शाखा और कृष्ण भक्ति शाखा।

### राम भक्तिशाखा

राम भक्तिशाखा के प्रमुख कवि तुलसीदास हैं। इस शाखा के काव्यों में राम को विष्णु का अवतार मानकर मर्यादा पुरुषोत्तम और लोक-रक्षक के रूप में चित्रित किया गया है। वे एक ऐसे आदर्श मानव, राजा, पुत्र, भाई, पति आदि के रूप में भी चित्रित हैं जो सभी केलिए पूजनीय हैं। तुलसीदास ने अपने काव्य में राम राज्य के नाम पर एक आदर्श-समाज की स्थापना को भी भक्ति का लक्ष्य माना।

### तुलसीदास

रामभक्ति शाखा के सबसे महत्वपूर्ण कवि हैं गोस्वामी तुसलीदास। जिनके सबसे महत्व- पूर्ण एवं लोकप्रिय महाकाव्य है 'रामचरितमानस'। यह सात खंडों वाला ग्रंथ न केवल धार्मिक है

बल्कि, भारतीय संस्कृति के विभिन्न आधार शिलाओं में सबसे महत्वपूर्ण भी है। इसमें सामाजिक समरसता, आदर्श, सामाजिक-राजनैतिक व्यवस्था, नारी सम्मान और सांस्कृतिक मूल्यों को उजागर किया गया है।

तुलसीदास की अन्य रचनाएँ हैं कवितावली, गीतावली, दोहावली और विनय पत्रिका। 'रामचरितमानस' उच्च कोटि का एक महाकाव्य है। उत्तर प्रदेश के घर-घर में इसका रोज़ाना भक्तिपूर्वक पठन-पाठन होता है।

## कृष्णभक्ति शाखा

कृष्ण भक्ति साहित्य में मुख्य रूप से कृष्ण के लीला-माधुर्य, बाललीला, रासलीला और प्रेम भक्ति का चित्रण किया गया है। इस धारा के आधार स्तंभ सूरदास हैं जिन्होंने ब्रजभाषा में कृष्ण के रूप का वर्णन किया । हिंदी साहित्य में एक लोकप्रिय उक्ति भी है-'सूर सूर तुलसी ससि'। राम भक्ति काव्य में राम को मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में चित्रित किया गया है तो कृष्ण भक्ति काव्य में कृष्ण को बाल - सखा और प्रेमी के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

### सूरदास

कृष्ण भक्तिशाखा के सबसे महान एवं प्रसिद्ध कवि सूरदास हैं, और इनके द्वारा रचित सबसे लोकप्रिय काव्य हैं - 'सूरसागर' । यह भगवान कृष्ण के प्रति समर्पित भक्ति गीतों का विशाल संग्रह है। इसमें प्रेम एवं वात्सल्य भावों के साथ-साथ कृष्ण की बाल-लीलाओं का अत्यंत मार्मिक वर्णन भी है। ब्रज भाषा में विरचित इस महाकाव्य में भगवान कृष्ण के पूरे जीवन का भी चित्रण शामिल है। वर्णन शैली की मनोहारिता एवं विशिष्टता के कारण यह उच्चकोटि का महाकाव्य सिद्ध हुआ। इसमें श्रीकृष्ण के प्रति कवि के अटूट प्रेम का सजीव वर्णन है जिसमें वात्सल्य, शांत और श्रृंगार के सौंदर्य का समावेश है। 'सूरसागर' के अलावा 'सूर सारावली', 'साहित्य लहरी' जैसी प्रमुख कृतियों में कृष्ण की लीलाओं का मार्मिक वर्णन मिलता है।

'सूरसागर' के भ्रमरगीत और बाल लीला खंड भक्ति और प्रेम के भावात्मक एवं आध्यात्मिक संबंध को दर्शाता है।

सूरदास की कविताओं ने भक्ति आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इसके अतिरिक्त ब्रज बोली को साहित्यिक भाषा के रूप में ऊपर उठाने में भी सूरदास और उनकी रचनाओं की भूमिका विशेष उल्लेखनीय है। भक्तिकालीन समाज के निराशापूर्ण जीवन एवं कटु अनुभव को दूर करने में भी कवि और उनके काव्य सफल सिद्ध हुए।

## मीराबाई

जन साधारण के बीच कबीरदास, सूरदास और तुलसीदास के भजनों की तरह मीरा के भजनों का भी समान स्थान है। वे भक्ति काल की एक महान संत कवयित्री थीं। वे भगवान श्रीकृष्ण की अनन्य भक्त थीं और उन्हें अपना पति मानती थीं। उनका जीवन भक्ति, प्रेम और त्याग से भरा हुआ था। समाज और परिवार के विरोध के बावजूद उन्होंने कृष्ण भक्ति का मार्ग नहीं छोड़ा। उनकी रचनाएँ पद और भजन के रूप में प्रसिद्ध हैं। इन रचनाओं में कृष्ण के प्रति सच्चा प्रेम है। भक्ति की उच्चावस्था में वे अपने को कृष्ण में विलीन होने का अनुभव करती थी। कृष्ण भक्ति शाखा के अन्य प्रमुख कवि हैं नंददास, परमांनद दास, कृष्णदास, कुंभनदास आदि।

## विद्यापति

ये आदिकाल और भक्तिकाल के 'संक्रमणकाल' के कवि कहलाते हैं। उनकी रचना में आदिकालीन श्रृंगार और भक्तिकाल की भक्ति दोनों का मिश्रण मिलता है। विद्यापति को हिंदी का पहला गीतकार माना जाता है। मैथिली लोक-भाषा में पद-रचना करने के कारण वे 'मैथिल कोकिल' नाम से भी प्रसिद्ध हैं। इनके द्वारा रचित पदों का संकलन 'विद्यापति पदावली' नाम से प्रकाशित है। इनकी रचनाओं में भक्ति और श्रृंगार रस की प्रधानता है।

# अनुगामी कार्य

## गुज़रें - समझें : -

1. भक्तिकाल के प्रमुख कवि और उनकी रचनाओं के नाम लिखें।

## परखें - पहचानें : -

1. निर्गुण भक्तिधारा की विशेषताओं पर टिप्पणी लिखें।
2. राम भक्ति और कृष्ण भक्ति शाखा के कवियों और उनकी रचनाओं पर लघु लेख तैयार करें।
3. 'सूर-सूर तुलसी ससी' – इस विषय पर एक भाषण तैयार करें।

## खोजें - अपनाएँ : -

1. भक्तिकालीन प्रमुख कवियों का डिजिटल पोर्टफोलियो तैयार करें।
2. ICT की मदद से कबीरदास के दोहों का ऑडियो बुक तैयार करें।

# रीतिकाल

रीतिकाल हिंदी साहित्य के उत्तर-मध्यकाल का नाम है, जिसका समय करीब 1650 ई से 1857 ई. तक माना गया है। काव्य में काव्य शास्त्रीय तत्वों जैसे रस, अलंकार आदि के प्रयोग की सफलता को ही इस काल के कवियों ने काव्य की सफलता मानी। इसलिए ही रीतिकाल के कवियों ने रस के भेदों, अलंकारों, नायिका भेदों आदि पर आधारित लक्षण-ग्रंथ लिखे थे। इस वैशिष्ट्य को ध्यान में रखकर ही रामचंद्र शुक्ल ने इस काल को रीतिकाल कहा था। कुल मिलाकर रीतिकाल में प्रयुक्त 'रीति' शब्द का अर्थ काव्य रचना की वह प्रणाली है जिसमें काव्य-शास्त्र के विभिन्न अंगों के नियमों और लक्षणों के अनुसार काव्य रचना की जाती हो। इसलिए रीतिकाल के कवि इसी लीक पर चलते हुए काव्य रचना करते थे और काव्य-शास्त्र के सिद्धांतों को विकसित करते थे।

## रीतिकाल की सामाजिक परिस्थितियाँ

रीतिकाल की सामाजिक, राजनैतिक परिस्थितियों को बदलने में मुगल साम्राज्य का पतन और सामंतवाद का उदय प्रमुख कारण थे। इसके फलस्वरूप राजनैतिक अस्थिरता भी फैल गई थी और समाज को शोषणकारी सामंतवाद और भोगविलास में डूबे उच्च धनिक वर्ग ने कसकर जकड़ लिया था। आम जनता की स्थिति अत्यंत दयनीय हो गई थी। नारी केवल भोग की वस्तु बनकर रह गई थी। ऐसी परिस्थिति में कला और साहित्य दरबारी मनोरंजन के साधन बन गए और शृंगारिकता भी हावी हो गई थी। ऐसी स्थितियों का प्रभाव साहित्य पर पड़ना स्वाभाविक था।

## रीतिकालीन रचनाओं की विशेषताएँ

दरबारी संस्कृति के ज़बरदस्त प्रभाव के कारण काव्य में सौंदर्य का अलंकृत भाषा में वर्णन करने में कवि लोग एक से बढ़कर एक अत्यंत रुचि लेते थे। इस काल के कवियों की विशेषताओं में ब्रज भाषा का प्रयोग, श्रृंगार रस का प्राधान्य शामिल हैं। काव्य रचना में रीति को दी गई प्रधानता के मुताबिक इस काल के कवियों को तीन वर्गों में विभाजित किया गया था जैसे रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त।

काव्यों के वर्ण्य विषयों में नायिका भेद का वर्णन विशेष रूप से है, जिसमें श्रृंगार रस, नारी सौंदर्य आदि प्रमुख थे। अलंकारों के अतिशय सौंदर्यात्मक प्रयोग की प्रचुरता के कारण इस काल को 'अलंकृत काल' नाम से भी अभिहित किया जाता है।

रचना शैली की विभिन्नता के आधार पर रीतिकाल के कवियों को मोटे तौर पर तीन वर्गों में बाँटा गया है।

**1. रीतिबद्ध**

**2. रीतिसिद्ध**

**3. रीतिमुक्त**

## रीतिबद्ध कवि

रीतिबद्ध कवि काव्य शास्त्रीय नियमों का पालन करते थे। इस वर्ग के प्रमुख कवि केशवदास थे। रसिकप्रिया, कविप्रिया इनकी रचनाएँ थीं।

## रीतिसिद्ध कवि

ये अपनी भावनाओं एवं अनुभूतियों के मुताबिक स्वच्छंद काव्यरचना करते थे। बिहारीलाल इस वर्ग के एकमात्र कवि है।

# *बिहारीलाल*

बिहारीलाल रीतिकाल के सबसे प्रमुख रीतिसिद्ध कवि हैं। उनका जन्म संवत् 1660 में बताया जाता है। ये जयपुर के महाराजा जयसिंह के आश्रित कवि थे। इनकी रचनाओं के संकलन का नाम है- 'बिहारी सतसई'। इन्होंने कोई लक्षण ग्रंथ नहीं लिखा था। पर शृंगार संबंधी जितने भाव , अनुभाव आदि हैं, इन सबके उदाहरण उनकी सतसई में मिलते हैं। वे शृंगार कवि के रूप में जाने जाते हैं। उनकी रचनाओं में शृंगार-वर्णन के संयोग और वियोग दोनों अवस्थाओं का बहुत ही मार्मिक वर्णन मिलता है। वे 'गागर में सागर' भरने की कला जानते थे।

## रीतिमुक्त कवि

रीतिमुक्त कवियों ने रीति परंपरा के नियमों को छोड़कर अपनी भावनाओं, अनुभूतियों के सहज उद्वेग को काव्य रूप प्रदान किया। घनानंद इस वर्ग के सबसे प्रमुख कवि थे। 'सुजानसागर', 'प्रेम पत्रिका' और 'विरह लीला' इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

# अनुगामी कार्य

## गुज़रें - समझें : -

1. रीतिकालीन प्रमुख कवि और उनकी रचनाओं के नाम लिखें।

## परखें - पहचानें : -

1. रीतिकालीन काव्य धारा की प्रमुख प्रवृत्तियों एवं रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, रीति मुक्त कवि और उनकी रचनाओं पर एक पानल चर्चा चलाए और रपट तैयार करें।
2. बिहारीलाल की काव्य-कला पर टिप्पणी तैयार करें।

## खोजें - अपनाएँ : -

1. ICT की मदद से बिहारीलाल के दोहों का ऑडियो बुक तैयार करें।